कमल संदेश

ikf{kd if=dk

संपादक

प्रभात झा, सांसद

कार्यकारी संपादक

डॉ. शिवशक्ति बक्सी

संपादक मंडल

सत्यपाल
संजीव कुमार सिन्हा

कला संपादक

धर्मेन्द्र कौशल
विकास सैनी

सदस्यता शुल्क

वार्षिक : 100/-
त्रि वार्षिक : 250/-

संपर्क

lnL;rk : +91(11) 23005798
Qku (dk-) : +91(11) 23381428
QSD l : +91(11) 23387887

ई-मेल

kamalsandesh@yahoo.co.in

प्रकाशक एवं मुद्रक : डा. नन्दकिशोर गर्ग द्वारा डा. मुकर्जी स्मृति न्यास, के लिए एक्सेलप्रिंट, सी-36, एफ.एफ. कॉम्पलेक्स, झण्डेवालान, नई दिल्ली-55 से मुद्रित करा के, डा. मुकर्जी स्मृति न्यास, पी.पी-66, सुब्रमण्यम भारती मार्ग, नई दिल्ली-110003 से प्रकाशित किया गया। सम्पादक - प्रभात झा

विषय-सूची

मध्य प्रदेश के पहले गैर कांग्रेसी मुख्यमंत्री के रूप में सत्ता में पांच साल पूरे करने वाले भाजपा नेता श्री शिवराज सिंह चौहान के सम्मान में आयोजित 'कार्यकर्ता गौरव दिवस' कार्यक्रम में ढाई लाख कार्यकर्ता जुटे।

कार्यकर्ता वंदन और जनता अभिनंदन, कार्यकर्ता गौरव दिवस सम्पन्न
एक रपट...... 15

साक्षात्कार
श्री शिवराज सिंह चौहान, मुख्यमंत्री म.प्र...... 20
श्री प्रभात झा, प्रदेश अध्यक्ष, भाजपा म.प्र...... 22

लेख
घोटालों के विरुद्ध कार्रवाई करने से भारत सरकार का इंकार क्यों ?
ykyÑ".k vkMok.kh...... 11
बिहार चुनाव 2010 के परिणामों में भाजपा की सफलताएं
çdk'k tkoMsdj...... 13
मत चूको चौहान!
lat; f}onh...... 16
क्यों था कांग्रेस हठ थामस चयन पर ही?
vEckpj.k of'k"B...... 27

मोर्चा / प्रकोष्ठ
भाजयुमो : युवा हुंकार रैली...... 29
भाजपा अनुसूचित जाति मोर्चा : डॉ. अम्बेडकर पुण्यतिथि...... 30

राज्यों से
fnYyh % गांव देहात में विकास हो...... 10
fgekpy izns'k % भाजपा पंचायतीराज प्रकोष्ठ की बैठक...... 26
mÙkj izns'k % वाराणसी में विस्फोट...... 28
jktLFkku % कांग्रेस से ऊबी जनता...... 30

संपादक के नाम पत्र...

बिहार विधानसभा चुनाव परिणाम सुशासन का परिणाम

कमल संदेश पत्रिका में प्रकाशित बिहार विधानसभा चुनाव पर विशेष ''जातिवाद बनाम विकास की लड़ाई'' लेख में दिए गए तथ्य चरितार्थ हो चुके हैं। चुनाव परिणामों की घोषणा से स्पष्ट हो गया है कि जनता अब सचेत हो चुकी है। जातिवाद से ऊपर उठकर राज्य की जनता ने लालू प्रसाद यादव की राजद और कांग्रेस को पूरी तरह से नकार दिया है। एनडीए द्वारा विगत वर्षों में जो विकास की गंगा बहाई थी, उसी के अनुरूप राज्य की जनता ने पुनः भाजपा एवं जद (यू) की गठबंधन को प्रचंड बहुमत से विजयश्री दिलाई है। पिछड़ेपन और अराजकता का पर्याय बन चुके बिहार राज्य की छवि अब बदली है। स्वास्थ्य, बिजली, सड़क और शिक्षा जैसी मूलभूत सुविधाओं के बढ़ने से बिहार राज्य की जीवन–शैली में सकारात्मक परिवर्तन देखने को मिला है। यह वास्तविकता है कि सुशासन से विकास को गति मिलती है। बिहार की जनता बधाई की पात्र है, जिसने जाति बंधन एवं संकीर्ण मानसिकता से ऊपर उठकर सुशासन के मुद्दों पर अपना श्रेष्ठ जनादेश दिया है।

–पंकज वाधवानी (एडवोकेट)
''श्री ज्ञान निवास'' 25/ए, राधानगर कॉलोनी, इन्दौर, मध्यप्रदेश

हमें लिखें..

सम्पादक के नाम पत्र

कमल संदेश

साद्र आमंत्रित

आपकी राय एवं विचार

सम्पादक,
कमल संदेश
डॉ. मुकर्जी स्मृति न्यास, पीपी–66
सुब्रह्मण्य भारती मार्ग, नई दिल्ली–110003
ई-मेल:
kamalsandesh@yahoo.co.in

उनका कहना है ...

मंत्री, सांसद, विधायक और पदाधिकारी को तो भूतपूर्व बनना ही पड़ता है लेकिन कार्यकर्ता दायित्व हमेशा बना रहता है, वह कभी पूर्व नहीं होता है और पार्टी संगठन का आधार बनता है।

fufru xMdjh]
jk"Vªh; v/;{k Hkktik

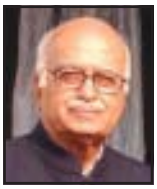

सीबीआई की स्वायत्तता और निष्पक्षता पर गहरी आंच आ चुकी है। इसकी जांच पड़ताल पर किसी को भी भरोसा नहीं रह गया है। अब यह केन्द्र सरकार का सहज हथियार बनकर रह गई है जिससे जांच पड़ताल की या तो मात्र लीपापोती होती है या फिर इसका इस्तेमाल अपने राजनैतिक विरोधियों को तंग करने के लिए किया जाता है।

& ykyÑ".k vkMok.kh] vè;{k] Hkktik lkalnh; ny

देश में किसानों की हालत पहले से ज्यादा बदतर होती जा रही है और सरकार झूठे वायदे कर रही है कि किसानों को मुआवजा दिया गया और उनके विकास के लिए बहुत काम किए हैं, जबकि हकीकत यह है कि गांव के किसानों की जमीनें जबरन अधिग्रहित की जा रही हैं और उनको मुआवजा भी पूरा नहीं दिया जा रहा।

&jktukFk flag
iwoZ jk"Vªh; v/;{k Hkktik

कांग्रेस भ्रष्टाचार के चक्रव्यूह में ऐसी फंस गयी है कि उसे बाहर निकलने का रास्ता असंभव हो गया है। भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ता, यूपीए के विकल्प के रूप में भारतीय जनता पार्टी को स्थापित करने के लिए कटिबद्ध हों।

& v#.k tsVyh
jkT;lHkk esa foi{k ds usrk

सम्पादकीय

विचारधारा के रामसेतु के सम्मान का दिन था कार्यकर्ता गौरव दिवस

29 नवंबर 2010 – कार्यकर्ता गौरव दिवस, जनता वंदन कार्यकर्ता अभिनंदन का आयोजन, स्थान–जम्बूरी मैदान भोपाल।

कुछ लोग इतिहास लिखते है, कुछ लोग इतिहास पढ़ते है। भारतीय जनता पार्टी का कार्यकर्ता इतिहास सदैव गढ़ता है। ...और इतिहास की इसी तारीख को गढ़ा मध्यप्रदेश भाजपा के जम्बूरी मैदान में कार्यकर्ता समागम ने। कार्यकर्ता जो आ सके उनकी संख्या ढ़ाई लाख को पार कर गई। हाँ, यह तारीख अब राजनीति का इतिहास बन गई। भाजपा को छोड़कर किसी राजनीतिक दल में ऐसा सामर्थ्य कहां ? यह आयोजन अद्‌भुत प्रयोग था। नवाचार व अभिनवता की अनुकरणीय मिसाल था। अपने लीडर के समक्ष कैडर की इतनी बड़ी मौजूदगी इतिहास के पन्ने पलटने पर भी दिखाई नहीं देती। यह चुनाव की सभा भी नहीं थी और ना ही चुनाव के लिए कार्यकर्ताओं का संगम। यह तो कार्यकर्ताओं का गौरव का दिन था। जनता के वंदन और उनके अभिनंदन का समारोह था। राजनीतिक विश्लेषकों और विशेषज्ञों के कथन को हम यहां दोहराएं तो उन्होंने अपने साफ शब्दों में कहा है कि रफ्तार यदि यही रही तो कार्यकर्ता की ताकत और जनता के आशीर्वाद से मध्यप्रदेश में भाजपा को हैट्रिक बनाने में कोई कठिनाई नहीं आयेगी।

भाजपा कार्यकर्ता का स्वभाव और चरित्र यही होता है कि उसके गौरव का कारण उसके विचार की उपलब्धि होती है। संगठन की उपलब्धि को वह अपनी उपलब्धि मानता है। यह अभिनंदन, यह सम्मान उस कार्यकर्ता का था, जिसकी रीढ़ की हड्‌डी झुक गई लेकिन वह भाजपा के लिए काम करता रहा। ये उस लाठी का सम्मान था जो कार्यकर्ता उस लाठी के सहारे चलते–चलते घर–घर चुनाव की पर्ची बांटता है, धरना और आंदोलन करता है। ये सम्मान उन आंखों का है, जिसमें भारत के वैभव के सपने हैं और उन सपनों को पूरा करते–करते कर्मठता से संगठन का काम किया, वहीं आंखें जो अब धंस चली हैं, यह उन आंखों का सम्मान था। यह सम्मान उन कार्यकर्ताओं का था, जिन्होंने बिलखते परिवार की परवाह नहीं की और जनसंघ का 'दीया' जलाते रहे, भाजपा का कमल खिलाते रहे। ऐसे कार्यकर्ताओं के मन का सम्मान था। यह सम्मान उन लोगों का था, जिनका जीवन संघर्ष था। ये सम्मान नींव का पत्थर बनकर काम करने और इसी में ही सुकुन पाने वाले कार्यकर्ता का था। यह सम्मान नौजवानों का था, जिन्होंने अपनी जवानी पार्टी के काम में लगा दी और उफ नहीं की। जो अनाम रहकर पार्टी के नाम के लिए काम करते हैं। ये सम्मान उन महिला कार्यकर्ता का था जिन्होंने पार्टी का परिवार की तरह सहयोग किया। यह सम्मान उन वनवासी कार्यकर्ताओं का था, जिन्होंने भाजपा को अपनाया, बढ़ाया और पार्टी की सेवा में लग गये। लाखों कार्यकर्ताओं का यह सम्मान था, जो गांव–गांव की गली कूचे में भाजपा का परचम फहराते हैं।

यह उन कार्यकर्ताओं का सम्मान भी है, जो राजनीति को व्यापार नहीं मानते और व्यापार के लिए राजनीति नहीं करते। यह सम्मान उनका भी था, जिन्होंने विचार के लिए आपातकाल की जेल स्वीकार कर ली लेकिन 20 सूत्रीय को नहीं। यह सम्मान उन कार्यकर्ताओं और उन परिवारों का था जिन्होंने कच्छ, गोवा और कश्मीर के

आंदोलन में अपने को खपा दिया, जिन्होंने जनसंघ का 'दीया' जलाने के लिए अपने को जला दिया। यह पोलिंग बूथ पर बैठने वाले लाखों कार्यकर्ताओं के गौरव और सम्मान का दिन था। ऐसे कार्यकर्ता जो बिना किसी स्वार्थ के निर्विकार भाव से सीमा पर लड़ने वाले सिपाही की तरह कार्य करते हैं। यह सम्मान उन बच्चों का भी है जिन्हें माता–पिता के पार्टी के काम में लगे रहने के कारण स्नेह नहीं मिल पाया। यह सम्मान उस संगठन का है जिसने राष्ट्रवाद, विकास और सुशासन का त्रिघोष एक साथ किया।

मध्यप्रदेश का गौरव का यह दिन कार्यकर्ता के लिए और अधिक उत्साह से भरा दिखाई दिया जब वनवासी नायक टंटया भील की झांकी लेकर नाचते गाते हुए वनवासी कार्यकर्ता अपने उत्साह का प्रगटीकरण कर रहे थे। सुशासन की नायिका अहिल्या बाई होल्कर भाजपा से एकाकार होने का प्रमाण बन रही थी। चौबीस वर्षीय क्रांतिकारी नवयुवा, जिनका एक हाथ मूंछ पर और एक हाथ पिस्तौल पर रहा करता था, ऐसे चन्द्रशेखर आजाद का चित्रण हर युवा के मन में स्वाभिमान का बोध कराने वाला दिन बना रहा था। हरदा के किसान झांकी, सागर के हरीसिंह गौर, जबलपुर के रघुनाथ शाह, शंकर शाह तो मुरैना के रामप्रसाद बिस्मिल मध्यप्रदेश की गौरव गाथा का गान कर रहे थे। राजा भोज के राज्यारोहण के एक हजारवें वर्ष में राजा भोज की झांकी कल्याणकारी राज्य की स्थापना का उद्घोष कर रही थी। महू से आये डॉ. भीमराव अम्बेडकर भाजपा के सामाजिक समरसता के संदेश को स्पष्ट कर रहे थे। मध्यप्रदेश की अस्मिता, गौरव और सम्मान से भाजपा के कार्यकर्ता के एकात्म होने का दिन था यह।

सन् 1951 में जनसंघ से चली भाजपा तक की यात्रा, और आगे बढ़ते–बढ़ते जैत गांव के किसान के बेटा को मुख्यमंत्री निवास में लगातार पांच वर्ष पूरे करने के भाजपा के गौरव की यात्रा संबंधी प्रदर्शनी भी जम्बूरी मैदान में थी। विचार के लिए आंदोलन, संगठन के लिए अभियान, जनता के लिए सेवा व सुशासन और इस सबके लिए खुद को मिटा देने का जज्बा रखने वाले कार्यकर्ता की कहानी भाजपा की इस विचार यात्रा प्रदर्शनी में अभिव्यक्त हुई।

यह गौरव का दिन मध्यप्रदेश में राजनीति के स्थायित्व का था। विकास और सुशासन को आंदोलन बनाने वाली सरकार के लिए ताकत देने वाला एक अभियान भी था। यह समारोह मध्यप्रदेश में कांग्रेस के लुप्त, गुप्त और सुप्त होने का प्रत्यक्ष प्रमाण था। कांग्रेस के आईसीयू में पहुंचने की सूचना था।

भारतीय जनता पार्टी ने विचार केन्द्रित राजनीति की है, सेवा और सुशासन का मंत्र सिद्ध किया है। कार्यकर्तापन ही कार्यकर्ता की पहचान है। नेता चाहे जितना बड़ा हो जाये, वह केन्द्र में किसी पद पर हो या राज्य में, जिसमें यह कार्यकर्तापन नहीं होगा उसे संगठन में मान्यता नहीं मिल सकती। यह आयोजन उस कार्यकर्तापन को सम्मान देने का था।

...और यह आखरी पड़ाव भी नहीं है। यह सिलसिला जारी रहने वाला है, यह उत्सव वैचारिक भगवान का था जो गांव–गांव में विचार की आराधना करते है, यह उत्सव विचारधारा के रामसेतु का था। ■

शत्–शत् नमन

भाजपा के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं संगठन शिल्पी स्व. कुशाभाऊ ठाकरे पुण्यतिथि (28 दिसम्बर)

संसदीय गतिरोध की पूरी जिम्मेदारी सरकार पर : लालकृष्ण आडवाणी

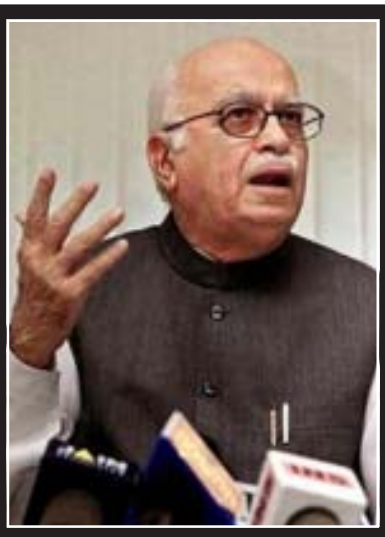

भाजपा संसदीय दल के अध्यक्ष श्री लालकृष्ण आडवाणी द्वारा 2 दिसम्बर को जारी प्रेस वक्तव्य

संसद के शीतकालीन सत्र का गतिरोध बना हुआ है। इस गतिरोध की पूरी जिम्मेदारी यूपीए सरकार की है।

यूपीए सरकार के उन सभी संस्थाओं को ध्वस्त कर दिया है जो भारत में जनजीवन में शुचिता के काम के लिए जांच पड़ताल करते हैं।

सीबीआई की स्वायत्तता और निष्पक्षता पर गहरी आंच आ चुकी है। इसकी जांच पड़ताल पर किसी को भी भरोसा नहीं रह गया है। अब यह सरकार का सहज हथियार बनकर रह गई है जिससे जांच पड़ताल की या तो मात्र लीपापोती होती है या फिर इसका इस्तेमाल अपने राजनैतिक विरोधियों को तंग करने के लिए किया जाता है।

केन्द्रीय सतर्कता आयोग (सीवीसी) सरकार की आंतरिक सतर्कता का काम करता है। इसके प्रमुख निदेशक की नियुक्ति पूरी तरह खत्म हो गई है जिससे सीवीसी को एक इंस्टीट्यूशन का जो रूप मिलता है, अब उस पर कोई भरोसा नहीं रह गया है। भ्रष्टाचार के मामले में आरोपित व्यक्ति को सीवीसी का निदेशक नियुक्त किया गया है जिसने 2जी स्पेक्ट्रम आवंटन के औचित्य पर सवाल उठा कर सीवीसी और सीएजी की अथारिटी को ही इंकार करने की कोशिश की है। उसकी नियुक्ति पर पहले ही लोकसभा में विपक्ष की नेता ने नियुक्ति कालेजियम की बैठक में प्रश्नचिह्न लगाया था, फिर मीडिया में और बाद में सुप्रीम कोर्ट के सामने भी उनके नियुक्ति पर सवाल खड़ा हो चुका है।

सरकार विपक्ष से यह उम्मीद नहीं कर सकती है कि वह सीबीआई और सीवीसी को एक ऐसा उपयुक्त संस्थान स्वीकार कर ले जो ईमानदारी से 2जी स्पेक्ट्रम आवंटन घोटाले की जांच करेगा।

प्रधानमंत्री के पूर्व संचारमंत्री श्री ए. राजा को बारबार क्लीनचिट दे रखी थी। उन्होंने देशभर में मचे कोहराम पर भी जरा ध्यान नहीं दिया। इस मुद्दे पर संसद में पहले चर्चा राज्यसभा में 23.7.2009 को हुई। स्पष्ट है कि विपक्ष कार्रवाई चाहता है, इसलिए हमें संसद में गतिरोध बनाए रखने का असाधारण कदम उठाना पड़ा है। जबकि हम देख रहे हैं कि एक के बाद एक घोटालों को सरकार ने नजरअंदाज कर रखा है। यदि संसदीय गतिरोध न होता तो श्री ए. राजा कभी इस्तीफा नहीं देते, यदि लोगों के खिलाफ जाने का यह भय न होता कि राष्ट्रमण्डल खेलों की आयोजन में हुए विभिन्न घोटालों पर कुछ न कुछ कार्रवाई अवश्य शुरू की जाए तो सरकार कुछ न करती।

2जी स्पेक्ट्रम आवंटन घोटाले का मामला इतना विस्तृत और गहराई तक जा चुका है, जो लोक लेखा समिति (पीएसी) के दायरे को भी कहीं पार कर चुका है। सीएजी सरकार का आंतरिक आडिटर है। इसमें कई तरह के एकाउण्टिंग और आडिटिंग विषय है। पीएसी सीएजी के 'पैरा वाइज' टिप्पणियों तक सीमित रहती है। यह सीएजी के समक्ष मुद्दों को लांघ कर आगे का आकलन नहीं कर सकती है।

2जी स्पेक्ट्रम आवंटन घोटाले में विभिन्न स्तरों के मुद्दे शामिल हैं। ऐसा क्यों जरूरी रहा कि दूरसंचार पोर्टफोलियो डीएमके को ही आवंटित किया गया? क्या कार्पोरेट हित इतने अधिक भारी पड़ गए कि डीएमके में भी केवल एक ही खास व्यक्ति को अन्य लोगों को छोड़ते हुए, यह पोर्टफोलियो दिया गया? क्या दूरसंचार मंत्री और उनके निकटवर्ती सहयोगी नियमित रूप से कार्पोरेट लाबिस्ट के साथ 2जी स्पेक्ट्रम आवंटन की नीति के निर्धारण में सम्पर्क में नहीं रहे?

भारतीय लोकतंत्र के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण कामकाज में विभिन्न संस्थानों के संदर्भ में इन लाबिस्टों की भूमिका

का क्या सच है? क्या आवंटन नीति निर्धारित करते हुए कुछेक लोगों की कीमत पर राष्ट्रीय खजाने को नुकसान नहीं उठाना पड़ा? क्यों 2007–08 में स्पेक्ट्रम आवंटन को 2001 के मूल्यों पर दिया गया? सरकारी खजाने को कितनी बड़ी मात्रा में नुकसान उठाना पड़ा? क्या ऐसे प्रमाण उपलब्ध हैं जिनसे पता चल सके कि आवंटन अथारिटी और लाभार्थियों के बीच कितना गहरा सम्बंध रहा?

ऐसे बहुत से मुद्दे हो सकते हैं जो पीएसी के दायरे में नहीं आते हैं। कुछ मुद्दे पीएसी के साथ अभिव्याप्त हो सकते हैं परन्तु दो अलग–अलग संसदीय समितियों के बीच सीमित अतिव्याप्ति के बारे में कोई नई या असाधारण बात कुछ नहीं है।

जब हम देखते हैं कि जांच एजेंसियां मामलों के साथ समझौता करने में लगी है, जब हम देखते हैं कि घोटाले का परिमाण अपने किस्म का अद्वितीय रूप धारण किए हुए है, जब हम देखते हैं कि सरकार इंस्टीट्यूशन के उच्च से उच्चतम अधिकारी ऐसे मामलों को ढांक रहे है जो लोकतंत्र के प्रभावकारी कामकाज के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है, तब संसद अपनी जिम्मेदारी से बच नहीं सकती है और कहे कि हम इस मामले की जांच नहीं करेंगे।

समझ में नहीं आता कि आखिर क्यों सरकार संयुक्त संसदीय समिति से घबराती है? समिति का अध्यक्ष सरकारी नामिति होगा। क्या हम यह मान लें कि जेपीसी के लिए अपने कामकाज में पारदर्शिता को जो महत्व है, उससे सरकार घबरा रही है क्योंकि तंग करने वाला यह सच उसके सामने है। संसद गतिरोध की पूरी जिम्मेदारी सरकार पर है। यदि एक बार जेपीसी की घोषणा हो जाती है तो एनडीए तुरंत ही संसदीय कामकाज शुरू करने के पक्ष है। जितना जेपीसी के गठन पर देरी की जाएगी उतना ही देश को यह मानने का हक होगा कि सरकार सच से बचने और इसका पता लगाने से कतरा रही है क्योंकि ऐसा होने से सरकार को शर्मिंदगी उठानी पडेगी। ■

माकपा का गुंडाराज
भाजपा कार्यकर्ताओं पर पुलिस की बर्बरता

गत 30 नवम्बर को भाजपा सांसद श्री चंदन मित्रा द्वारा जारी प्रेस वक्तव्य

भारतीय जनता पार्टी पुलिस द्वारा कोलकाता में शांतिपूर्ण विरोध प्रदर्शन करने वाले कार्यकर्ताओं पर निर्मम प्रहार की कड़ी निंदा करती हैं। स्पष्ट है कि पुलिस ने यह बर्बरता राज्य के सीपीआई(एम) के शासन में उसके आदेशों पर फैलाई। पुलिस ने पार्टी कार्यकर्ताओं के प्रति इस प्रकार की निर्दयता बरती और अकारण ही उन पर हमला किया जबकि ये कार्यकर्ता सरकार के शासन करने वाली राइटर्स बिल्डिंग का घेराव करने के लिए एकत्रित हुए थे। भाजपा समर्थकों की भारी भीड़ से घबरा कर सीपीएम की वह रैली बेमानी होती जा रही थी, जो उसने निकटवर्ती क्षेत्र में शुरू कर रखी थी और जिसमें मुख्यमंत्री बुद्धदेव भट्टाचार्य प्रमुख वक्ता थे। यही कारण रहा कि पुलिस ने भाजपा की विशाल रैली को सफल होते देख बर्बरता का परिचय दिया।

सीपीएम रैली को सफल बनाने के लिए पुलिस हताशा में पगला गई और उसने शांतिपूर्ण भाजपा समर्थकों पर लाठी चार्ज कर 1000 लोगों को घायल कर दिया। टेलीविजन पर प्रसारित चित्रों में स्पष्ट दिखाया है कि किस प्रकार से कोलकाता पुलिस और आएएफ के जवान पार्टी कार्यकर्ताओं के पीछे भागे और उन्हें गलियों में जाकर निर्दयतापूर्वक खींच खींच कर मारा। प्रदेशाध्यक्ष राहुल सिन्हा, पूर्व प्रदेशाध्यक्ष तथागत राय तथा कई अन्य प्रमुख पार्टी कार्यकर्ता इस लाठीचार्ज में गम्भीर रूप से घायल हुए हैं और उन्हें अस्पताल में भर्ती कराना पड़ा है।

इससे पूर्व, पुलिस पार्टी कार्यालय पहुंची, जो विरोध प्रदर्शन स्थल से थोड़ी ही दूर था और हजारो पार्टी कार्यकर्ताओं पर लाठी चार्ज कर उन्हें राइटर्स बिल्डिंग जाने से रोकने की कोशिश की। जब पुलिस दृढ़ निश्चियी पार्टी कार्यकर्ताओं का उत्साह डगमगा नहीं सकी तो उसने आंसू गैस के 100 गोले बरसा दिए। पुलिस ने उस मंच को तोड़फोड़ और ध्वस्त कर डाला जहां से नेताओं को अपने कार्यकर्ताओं को सम्बोधित करना था। हजारों पार्टी सदस्यों और समर्थकों को भी गिरफ्तार किया गया। भाजपा पुलिस के इस निर्मम कार्यों की गहरी निंदा करती है, जिससे फिर यह साबित हो जाता कि पुलिस खुलेआम वामपंथी सरकार को साथ देकर अपनी असहिष्णुता के लिए बदनाम होती जा रही है। सीपीएम ने दीवार पर लिखे इन अक्षरों को साफ–साफ पढ़ लिया है और जान लिया है कि उनका 34 वर्ष का लम्बा शासन अगले वर्ष के चुनावों में समाप्त होने वाला है। इसके बाद तो अब उनके पास अपना सिर छुपाने की जगह भी नहीं रह जाएगी और पश्चिमी बंगाल के लोगों का गुस्सा उनके इन अत्याचारों से भड़क उठा है। भाजपा सीपीएम के निर्मम गुण्डा राज और तृणमूल कांग्रेस की विध्वंसकारी राजनीति के खिलाफ जनसम्मति तैयार करने के लिए अपना शांतिपूर्ण आंदोलन जारी रखेगी। आज की सरकार–प्रायोजित भाजपा कार्यकर्ताओं के प्रति हिंसा इस बात का उदाहरण है कि ''विनाश काले विपरीत बुद्धि।'' ■

कोपेनहेगन शिखर सम्मेलन में पर्यावरण मंत्री ने भारत की स्थिति को कमजोर किया

तबसे यूपीए– II ने शासनभार संभाला है तब से भारत में और विकासशील देशों में यह सही आशंका व्यक्त की जा रही है कि जलवायु परिवर्तन सम्बंधी बातचीत में भारत की पारम्परिक स्थिति कमजोर पड़ती जा रही है। पर्यावरण मंत्री श्री जयराम रमेश ने कानकून में यूएन जलवायु शिखर सम्मेलन की पूर्व संध्या पर एक बयान दिया है। समझा जाता है कि उन्होंने अपने वक्तव्य में कहा है– ''हमने निश्चित ही देश की जलवायु सम्बंधी मामलों की निगरानी, समीक्षा और सत्यापन/अंतर्राष्ट्रीय परामर्श एवं विश्लेषण की एक ऐसी प्रणाली तैयार करने में लगे हैं जो राष्ट्रीय सम्प्रभुता को अपनाए... और हमने इस बारे में एक आप्रेशनल गाइडलाइन का सुझाव भी दिया है कि यह प्रणाली किस प्रकार कामकाज करे।''

7.12.2009 को पर्यावरण मंत्री का कोपेनहेगन रवाना होने से पूर्व संसद में साफ–साफ कहा था कि–

'' चौथी ''नान–नेगोशियेबल'' बात यह है कि हमने क्यों इमदादी कार्यों की अन्तर्राष्ट्रीय जांच–प्रक्रिया को स्वीकारा? हम इसी स्तर की अन्तर्राष्ट्रीय जांच प्रक्रिया को स्वीकार नहीं करेंगे और न ही इमदादी कार्यों की अन्तर्राष्ट्रीय जांच प्रक्रिया के उसी प्रकार को मानेंगे। अतः, जहां कहीं भी विश्व वित्त और तकनॉलाजी के रूप में समर्थन देता है, उस सीमा तक वे यहां आ सकते हैं और हम क्या कर रहे हैं कि इसका सत्यापन कर सकते हैं। परन्तु जहां वे हमारी इमदाद नहीं कर रहे हैं वहां हमारे कामकाज का अधिकांश भाग इमदादी कार्यों से बाहर रहता है– ऐसे में हमारे कामकाज की अन्तर्राष्ट्रीय जांच नहीं की जा सकती है। फिर भी, हमारी प्रणाली खुली है। हम घरेलू प्रणाली अपना रहे हैं। हमारी प्रणाली संसद को जवाबदेह है।'' संसद में इस आश्वासन के बावजूद कोपेनहेगन में पर्यावरण मंत्री ने स्वयं को ऐसी स्थिति में बांध लिया जो इस प्रकार है–

राज्यसभा में प्रतिपक्ष के नेता श्री अरुण जेटली द्वारा 3 दिसम्बर को जारी प्रेस वक्तव्य

''नान–अनेक्शेयर–I पार्टियां नेशनल कम्युनिकेशन्स के माध्यम से अपने कार्यों के कार्यान्वयन की जानकारी प्रदान करेंगी, जिसमें अन्तर्राष्ट्रीय परामर्श और स्पष्ट निश्चित गाइडलाइन के अन्तर्गत विश्लेषण का यह प्रावधान रहेगा कि राष्ट्रीय सम्प्रभुता का सम्मान सुनिश्चित किया जाएगा।''

इस प्रकार, भारत की संसद में जो यह साफ–साफ आश्वासन दिया गया कि गैर–इमदादी घरेलू कार्यों की कोई अन्तर्राष्ट्रीय जांच नहीं होगी, इस स्थिति से हट कर पर्यावरण मंत्री ने भारत को अंतर्राष्ट्रीय परामर्श और विश्लेषण की स्थिति से बांध दिया है।

स्पष्ट है कि विश्लेषण में यह बात रहेगी कि कितने लक्ष्य प्राप्त हुए हैं या कितने लक्ष्य प्राप्त नहीं हो पाए हैं।

अब उन्होंने कानकुन सम्मिट की पूर्व संध्या पर भारत को देश के जलवायु कार्यों के मामले में निगरानी, समीक्षा, सत्यापन/अन्तर्राष्ट्रीय परामर्श और विश्लेषण की प्रणाली की स्थिति में प्रतिबद्ध कर दिया है। भारत ने इस स्थिति को कभी नहीं स्वीकारा। विकासशील देशों ने भी यह स्थिति नहीं मानी। यह बदलाव क्यों हुआ? यह संसद में दिए गए उनके आश्वासनों के खिलाफ है। यह जी–77 एलाइंस के निर्देशों के विपरीत है जिसे भारत ने इसी प्रकार के विचार रखने वाले देशों के साथ तैयार किया था। यह ईक्विटी के प्राथमिक सिद्धांतों के भी विपरीत है, जहां विकसित देश प्रदूषण फैलाते हैं और गैर–इमदादी कार्यों के माध्यम से भारत को पर्यावरण सुधार की कीमत चुकानी पड़ती है और उसी प्रकार के कदम अन्तर्राष्ट्रीय सत्यापन के दायरे में आ जाते हैं जिनसे इन्हें बंध जाना पड़ जाता है।

भारतीय जनता पार्टी कानकुन शिखर सम्मेलन की पूर्व संध्या पर भारत की अपनी स्थिति से हट कर अपनाई गई स्थिति पर गहरी चिंता व्यक्त करती है। हम प्रधानमंत्री से निजी रूप से हस्तक्षेप करने का अनुरोध करते हैं और चाहते है कि वे पर्यावरण मंत्री को अपनी राष्ट्रीय परिस्थिति से न भटकने दें जिससे यह स्थिति विकसित देशों के पक्ष में न जाए। ■

गांव देहात में विकास हो : राजनाथ सिंह

laoknnkrk }kjk

y दन में होने वाले ओलम्पिक में पुनः गोल्ड मैडल जीतकर लाऊंगा– यह शब्द थे, राष्ट्रमंडल खेलों में स्वर्ण पदक विजेता सुशील कुमार के। वे 28 नवम्बर 2010 को दिल्ली देहात विकास मोर्चा द्वारा आयोजित अपने अभिनन्दन समारोह में बोल रहे थे।

दिल्ली देहात विकास मोर्चा ने पूर्व केन्द्रीय मंत्री एवं भाजपा के राष्ट्रीय महामंत्री श्री विजय गोयल की अध्यक्षता में 2000 गांव देहात के लोगों का एक बड़ा कार्यक्रम गांव की पंचायत के रूप में नई दिल्ली में रखा था, जिसमें भाजपा के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री राजनाथ सिंह, पूर्व केन्द्रीय खेल मंत्री विक्रम वर्मा, भाजपा राष्ट्रीय महामंत्री श्री जगत प्रकाश नड्डा एवं पूर्व महापौर सुश्री आरती मेहरा ने पहलवान सुशील कुमार, प्रदीप कुमार एवं अनिल कुमार का अभिनन्दन किया।

श्री राजनाथ सिंह ने कहा कि मैं भी कुश्ती लड़ा करता था, पर धीरे–धीरे राजनीति की कुश्ती में कूद गया। उन्होंने कहा कि आज जरूरत है गांवों में खेलों के विकास के लिए साधन जुटाने की। देश में किसानों की हालत पहले से ज्यादा बदतर होती जा रही है और सरकार झूठे वायदे कर रही है कि किसानों को मुआवजा दिया गया और उनके विकास के लिए बहुत काम किए हैं, जबकि हकीकत यह है कि गांव के किसानों की जमीनें जबरन अधिग्रहित की जा रही हैं और उनको मुआवजा भी पूरा नहीं दिया जा रहा। अटल जी की सरकार के समय किसान क्रेडिट कार्ड और दूसरी योजनाएं आरंभ की गई थीं। कॉमनवेल्थ गेम्स में जहां खिलाड़ियों ने हमारा मान बढ़ाया, वहीं आयोजकों ने भ्रष्टाचार करके देश को बदनाम किया है।

श्री गोयल ने कहा कि पिछले 15 दिनों में उन्होंने करीब 150 गांवों का दौरा किया, जहां एक ओर लोगों में इस बात की चर्चा थी कि कॉमनवेल्थ गेम्स का रूपया तो शहरों पर खर्च किया गया पर मैडल गांव–देहात के सुशील कुमार जैसे युवा जीतकर लाए हैं। सरकार गांवों के विकास की ओर ध्यान नहीं दे रही और यहां पर सड़क, खड़ंजा, बिजली, पानी और सीवर की बहुत समस्याएं हैं।

श्री जगत प्रकाश नड्डा ने कहा कि गांवों तक सड़क और पानी पहुंचाने की जरूरत है। मैं जब हिमाचल में मंत्री था, तो हमने हिमाचल के गांवों के लिए बहुत विकास के काम किए थे। पूरे देश में गांवों के विकास के लिए अलग से योजना बननी चाहिए और केन्द्रीय बजट में ज्यादा रूपयों का प्रावधान गांव–देहात के विकास के लिए होना चाहिए।

श्री विक्रम वर्मा ने कहा कि खेल मंत्री होते हुए मैंने कुश्ती और पहलवानों को बहुत प्रोत्साहन दिया था और उन्हें गद्दें एवं अन्य सुविधाएं उपलब्ध कराई थीं। जिस समय कॉमनवेल्थ गेम्स का प्रस्ताव आया था, तब 1,000 करोड़ रूपए से भी कम का हमने अनुमान लगाया था किन्तु सरकार बदलने के बाद यह बजट 70 हजार करोड़ तक कैसे पहुंच गया ? अच्छा होता यदि कॉमनवेल्थ गेम्स में गांव–गांव और देहात में खेल के मैदान की सुविधाएं दी जातीं।

दिल्ली देहात विकास मोर्चा द्वारा आयोजित राष्ट्रमंडल खेलों के स्वर्ण पदक विजेता सुशील कुमार (दाएं) के अभिनंदन समारोह के दौरान भाजपा के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री राजनाथ सिंह, राष्ट्रीय महामंत्री श्री विजय गोयल एवं भाजपा दिल्ली प्रदेश के महामंत्री श्री रमेश विधूड़ी।

सुश्री आरती मेहरा ने कहा कि पूर्व महापौर होने के नाते मैं यह वादा करती हूं कि दिल्ली में गांवों पर हाउस टैक्स नहीं लगेगा। गांवों की बदतर हालत में सुधार करने की जरूरत है।

कार्यक्रम में गांवों से जुड़े भाजपा दिल्ली प्रदेश के महामंत्री श्री रमेश विधूड़ी, उपाध्यक्ष सतीश उपाध्याय, आर. पी. सिंह, विधायक कुलवन्त राणा, अनिल झा, मोहन सिंह बिष्ट, किसान मोर्चा के मंत्री अजीत खत्री, गौरव खारी, जय प्रकाश आदि ने भाग लिया एवं अपने विचार रखे। ■

घोटालों के विरुद्ध कार्रवाई करने से भारत सरकार का इंकार क्यों ?

✍ ykyÑ".k vkMok.kh

Hkkरतीय संसद का मानसून सत्र यदि मुख्य रूप से आम आदमी को त्रस्त करने वाली मुद्रास्फीति और आवश्यक वस्तुओं की आकाश छूती कीमतों से उपजे गुस्से पर केन्द्रित रहा तो वर्तमान शीतकालीन सत्र भ्रष्टाचार मुद्दे पर केन्द्रित हो रहा है, और एक के बाद एक घोटालों से देश के नाम पर कीचड़ उछल रही है। अनेकों को शायद यह पता नहीं होगा कि सन् 2004 में संयुक्त राष्ट्र के ड्रग्स और क्राइम कार्यालय (United Nations Office on Drugs and Crime) द्वारा भ्रष्टाचार के विरुद्ध एक समग्र कन्वेंशन औपचारिक रूप से अंगीकृत किया गया था।

56 पृष्ठीय दस्तावेज में संयुक्त राष्ट्र के तत्कालीन महासचिव श्री कोफी अन्नान की सशक्त प्रस्तावना थी, जो कहती है:

भ्रष्टाचार एक घातक प्लेग है जिसके समाज पर बहुव्यापी क्षयकारी प्रभाव पड़ते हैं :

- इससे लोकतंत्र और नियम का शासन खोखला होता है।
- मानवाधिकारों के उल्लंघन की ओर रास्ता बढ़ता है।
- विकृत बाजार।
- जीवन की गुणवत्ता का क्षय होता है।
- संगठित अपराध, आतंकवाद और मानव सुरक्षा के प्रति खतरे बढ़ते हैं।

भ्रष्टाचार के विरुद्ध इस कन्वेंशन के अनुच्छेद 67 के मुताबिक संयुक्त राष्ट्र के सभी सदस्य देश इसे स्वीकृति देंगे, तत्पश्चात् शीघ्र ही सम्बन्धित देश इसे पुष्ट करेंगे और स्वीकृति पत्र संयुक्त राष्ट्र के महासचिव के पास जमा कराएंगे।

प्रत्येक वर्ष सांसदों का एक समूह संयुक्त राष्ट्र की कार्यवाही में भाग लेने हेतु जाता है। इस वर्ष हमारी पार्टी के सांसद, हिमाचल प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री श्री शांता कुमार ने भाजपा संसदीय दल की पिछले सप्ताह मंगलवार की बैठक में बताया कि 140 देशों ने इस कन्वेंशन पर हस्ताक्षर कर दिए हैं, 14 ने अभी तक इसकी अभिपुष्टि नहीं की है। और मुझे यह कहते हुए दुःख होता है कि इन चौदह में से भारत भी एक है।

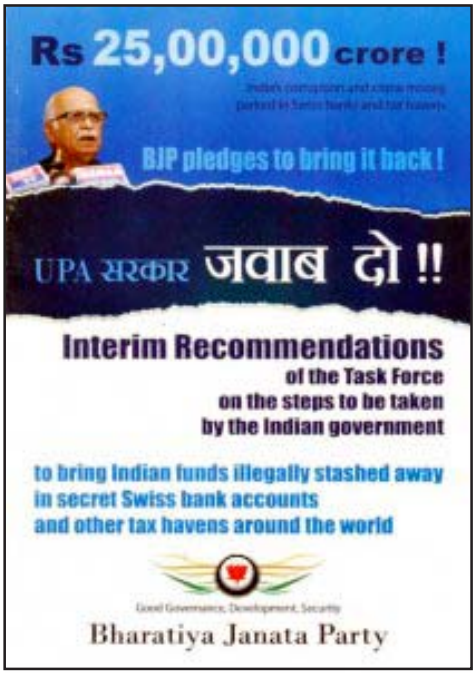

सन् 2009 के लोकसभाई चुनाव अभियान के दौरान भाजपा ने भारत से अवैध ढंग से धन को आयवरी कोस्ट, लीसटेनस्टीन जैसे टैक्स हैवन्स में ले जाए जाने का मुद्दा उठाया था। इस संदर्भ में सबसे ज्यादा स्विट्रजरलैण्ड का नाम लिया जाता है।

इसलिए मुझे यह जानकर अच्छा लगा कि संयुक्त राष्ट्र में जब स्विट्जरलैण्ड के प्रतिनिधि भ्रष्टाचार के मुद्दे विशेषकर अवैध सम्पत्ति के बारे में वैश्विक संस्था में बोले तो वह स्पष्टता से बोले। उनका वक्तव्य यहां विस्तृत रूप से उद्धृत करने योग्य है।

संयुक्त राष्ट्र में स्विट्जरलैण्ड के स्थायी मिशन का प्रतिनिधित्व करने वाले श्री मथाइस बच्मैन, सामान्य सभा के 65वें सत्र में 20 अक्तूबर, 2010 को बोले और कहा:

"भ्रष्टाचार से आर्थिक वृद्धि और विकास को गंभीर खतरा पैदा होता है। यद्यपि भ्रष्टाचार सीमित संख्या में लोगों को अमीर बनाता है परन्तु यह समाज, अर्थव्यवस्था और राज्य नाम की संस्था के ताने–बाने को कमजोर करता है।

इस समस्या से गहन चिंतित स्विट्जरलैण्ड ने भ्रष्टाचार से लड़ने के लिए राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर दृढ़ कार्रवाई की है। यह कार्रवाई, काले धन को सफेद बनाने तथा संगठित अपराध के विरुद्ध लड़ाई के साथ–साथ चल रही है।

अक्सर भ्रष्टाचार, संगठित अपराध और काले धन को सफेद बनाने के बीच एक सीधा सम्बन्ध होता है, विशेषकर इस प्रवृति का मुकाबला करने हेतु सरकारों द्वारा स्थापित किए गए तंत्र के संदर्भ में। यही राजनीतिक लोगों द्वारा धन के पलायन, जो अक्सर सुशासन के अभाव से जुड़ता है, पर भी लागू होता है।

भ्रष्टाचार के विरुद्ध संयुक्त राष्ट्र का कन्वेंशन (UNCAC)अवैध सम्पत्ति की वापसी नियमित करने के अंतरराष्ट्रीय उपायों में से एक मुख्य उपाय है। स्विट्जरलैण्ड ने इस कन्वेंशन जोकि सन् 2009 में पुष्ट किया गया, के प्रारूप बनाने और इसे मजबूत करने की प्रक्रिया में सक्रियता से भाग लिया।

इसके अलावा, 20 वर्षों से ज्यादा के अनुभव के आधार पर स्विट्जरलैण्ड ने UNCAC के वर्किंग ग्रुप की अध्यक्षता की जिसके चलते सम्पत्ति को वापस पाने की प्रक्रिया अपनाई गई। सम्पत्ति वापस पाने के क्षेत्र में स्विट्जरलैण्ड ने अत्यन्त दृढ़ता के साथ काम किया और अब यह ऐसा देश है जिसने राजनीतिकों द्वारा चुराई गई सम्पत्ति को बहुतायत संख्या में वापस किया है। व्यवहार में, सम्पत्ति की वापसी में उसे चिन्हित और समय से अवैध सम्पत्ति को जब्त करने के उद्देश्य से बहुत निवारक कदम उठाने पड़ते हैं।

निवारक कदमों की अंततः उपयोगिता घनिष्ठ अंतरराष्ट्रीय सहयोग पर निर्भर करती है। विशेष रूप से वित्तिय संस्थानों और अंतरराष्ट्रीय कानूनी सहायता से नियमन–इन दोनों की तत्परता से क्रियान्वयन काले धन को सफेद बनाने के विरुद्ध लड़ाई की प्रभावोत्पादकता की गारण्टी का मुख्य तत्व है।

अंतरराष्ट्रीय सहयोग की प्रभावकारिता अंततः राजनीतिक इच्छा शक्ति और राष्ट्रीय प्राधिकारों की दृढ़ता पर निर्भर करती है।

अवैध सम्पत्ति के सिलसिले में, सितम्बर 2010 में स्विस संसद ने एक कानून पारित कर उन देशों के लोगों को सम्पत्ति लौटाने हेतु और सुविधा दी है जहां से सम्पत्ति बेईमानी से लाई गई। यह उदाहरण बताता है कि सम्पत्ति के गबन के विरुद्ध लड़ाई राष्ट्रीय संसदों द्वारा उठाए गए विशिष्ट कदमों पर निर्भर करती है।"

स्विस बैंक एसोसिएशन के मुताबिक प्रसिध्द यूनियन बैंक ऑफ स्विट्जरलैण्ड (UBS) में काला धन जमा करने वालों की सूची में भारतीय शीर्ष पर हैं।

भाजपा इस अवैध धन के विरुद्ध काफी समय से अभियान चलाए हुए है। सन् 2009 के लोकसभाई चुनावों में इसने इसे मुख्य चुनावी मुद्दा बनाया था। शुरु में ही कांग्रेस नेताओं ने इस मुद्दे को उठाने पर भाजपा का मजाक उड़ाया था। लेकिन समय गुजरने के साथ ही भाजपा की यह मांग लोकप्रिय मांग बन गई। तब प्रधानमंत्री भी इसके सर्मथन में बोले।

उसी वर्ष, इस मुद्दे पर सतत् अध्ध्यन करने और मुद्दे को मुखर करने के लिए हमने एक कार्य दल (task force) का गठन किया था। जिसमें यह गणमान्य व्यक्ति थे : 1) श्री.एस. गुरुमूर्ति (चार्टर्ड एकाउटेंट और खोजपरक लेखक चेन्नई); 2) श्री अजीत डोभाल (सुरक्षा विशेषज्ञ नई दिल्ली); 3) डा. आर वैद्यनाथन (वित्ता प्रोफेसर, भारतीय प्रबंध संस्थान, बंगलुरु)।

इस कार्यदल द्वारा प्रकाशित एक ताजा प्रकाशन में अनुमान लगाया गया है कि विदेशों के टैक्स हैवन्स में 500 बिलियन अमेरिकी डॉलर (25 लाख करोड़ रुपए) से 1.4 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर (70 लाख करोड़ रुपए) के बीच भारतीय धन ले जाया गया है। प्रकाशन कहता हैः लूट का गणित विवादास्पद हो सकता है लेकिन लूट का तथ्य नहीं।

जैसाकि संयुक्त राष्ट्र में स्विस प्रतिनिधि ने ठीक ही कहा कि सम्पति वापस लाने हेतु अतंरराष्ट्रीय सहयोग की प्रभावकारिता "राजनैतिक इच्छा और राष्ट्रीय सरकारों की कार्रवाई करने की दृढ़ता पर निर्भर करती है।" चुनाव अभियान के दौरान प्रधानमंत्री ने यह घोषणा की थी कि विदेशी बैंकों में जमा भारतीय सम्पत्ति के सम्बन्ध में कार्रवाई उनके शासन में लौटने के पहले 100 दिनों में होगी। 500 से ज्यादा दिन बीत चुके हैं और अभी तक इस सम्बंध में कोई हलचल नहीं है। कारण राजनैतिक इच्छा का नितांत अभाव होना है।

इसलिए कोई आश्चर्य नहीं कि भ्रष्टाचार के विरुद्ध संयुक्त राष्ट्र कन्वेंशन की पुष्टि नही हो पायी है। संसद का कामकाज पिछले दो सप्ताहों से बंद पड़ा है। लेकिन सरकार समूचे विपक्ष की सर्वसम्मत मांग कि हाल ही में सामने आये भ्रष्टाचार के कांडों की जांच हेतु संयुक्त संसदीय समिति गठित किए जाने को स्वीकारने से मना कर रही है।

देश भारत सरकार से अपेक्षा करता है कि :

- भ्रष्टाचार के विरुद्ध संयुक्त राष्ट्र कन्वेन्शन की पुष्टि की जाए।
- हाल ही में उजागर हुए घोटालों की जांच हेतु संयुक्त संसदीय समिति गठित की जाए।
- सभी दोषियों को दण्डित किया जाए।
- और अंततः डा0 मनमोहन सिंह द्वारा लोकसभाई चुनाव अभियान के दौरान किए गए वायदे को पूरा किया जाए कि–हमारे देश से चुराकर विदेशों के टैक्स हैवन्स में जमा कराए गये अनगिनत धन को वापस लाएगी। ■

बिहार चुनाव 2010 के परिणामों में भाजपा की सफलताएं

✍ çdk'k tkoMsdj

बिहार चुनाव 2010 में भाजपा का अभूतपूर्व प्रदर्शन रहा है। इस सम्बंध में निम्नलिखित प्रमुख विशेषताएं उल्लेखनीय हैः

lEi.k :i ls ,uMh, dk izn'ku

– एनडीए ने बिहार विधानसभा में 243 सीटों में से 206 सीटों पर सफलता पाकर एक ऐतिहासिक विजय प्राप्त की है। यह सदन की कुल सीटों का 4/5 हिस्सा बनता है और लगभग सभी सीटों का यथार्थतः 84.77 प्रतिशत बैठता है। ये चुनाव परिणाम इतने निर्णायक है कि इन्हें 2009 के लोकसभा चुनाव में 175 विधानसभा खण्डों से बढ़कर कहीं अधिक सफलता मिली है।

– 15 वर्षों के लालू के जंगल राज की पृष्ठभूमि में कानून व्यवस्था की स्थिति विशेषतया अभूतपूर्व सुधारों के कारण बिहार में यह प्रदर्शन देखने को मिला है। 50000 से अधिक अपराधियों को जेल के सींखचों में डाला गया और फास्ट–ट्रैक अदालतों ने सजा सुनाई।

– बिहार के इतिहास में पहली बार शांतिपूर्ण और किसी भी प्रकार की दुर्घटना से मुक्त चुनाव हुए। यही कारण है कि महिलाओं ने बड़ी संख्या में अपने मताधिकार का प्रयोग किया।

– समाज के हर वर्ग ने श्री नीतीश कुमार और श्री सुशील मोदी के नेतृत्व को स्वीकार किया। सभी जातियों और यहां तक कि अल्पसंख्यकों ने भी विकास के लिए मतदान किया। एनडीए ने 38 जिलों में से 19 में तो विपक्ष का सफाया करते हुए सभी सीटों पर सफलता प्राप्त की। ये जिले हैं– अरकल, औरंगाबाद, पूर्वी चम्पारन, पश्चिमी चम्पारन, गोपालगंज, जहानाबाद, कटिहार, लखीसराय, मुंगेर, नालंदा, नवादा, रोहतास, शिवर, शेखपुरा, सीतामढ़ी, सिवान, सुपोल, वैशाली। यहां राजद और लोजपा एक भी सीट हासिल नहीं कर सकी।

Hkktik dh ie[k fo'k"krk,

– भाजपा को 37 सीटों का लाभ हुआ और जद(यू) को 27 का।

– भाजपा ने 102 सीटों पर चुनाव लड़कर 91 सीटें प्राप्त की, जिसका प्रतिशत 90 बनता है।

– भाजपा ने पार्टी द्वारा जीती सीटों में 16 प्रतिशत सीटों पर आगे रही।

– भाजपा ने चुनाव में लड़ी सीटों पर 39.5 प्रतिशत वोट प्राप्त किए।

– भाजपा ने फरवरी 2005 में 37 सीटों पर विजय प्राप्त की थी, जो अक्तूबर 2005 में बढ़कर 55 हो गई और अब 2010 के चुनावों में इसकी स्थति में अभूतपूर्व सुधार कर 91 सीटों पर पहुंच गई।

– राजद, लोजपा दोनों के सीटों की संख्या में 2005 के चुनावों में प्राप्त 85 सीटों से घटकर 2010 में मात्र 25 सीटों तक रह गई। उनके वोटों की संख्या भी गिरी, जिसमें राजद का प्रतिशत 23.5 प्रतिशत से गिरकर 18.6 प्रतिशत और लोजपा का 11.1 से गिरकर 6.7 प्रतिशत रह गया।

– लालूजी की पत्नी श्रीमती राबड़ी देवी दो सीटों पर चुनाव लड़ीं और दोनों में ही काफी भारी वोटों के अंतर से हारी। राघवपुर में वह जद(यू) के उम्मीदवार से पराजित हुईं तो सोनपुर में व भाजपा के उम्मीदवार से हारीं।

– लालू जी के दोनों साले साहब भी हारे, इनमें से एक ने निर्दलीय होकर और दूसरे ने कांग्रेस उम्मीदवार के रूप में चुनाव लड़कर ऐसी दुर्गति की हालत में पहुंच गए, जिसका उल्लेख करना भी उचित नहीं होगा।

– इसी प्रकार पासवान जी के दो भाई और दो दामाद भी चुनाव में हारे और कुल जीतीं 3 सीटों में से उनके परिवार के अंदर का कोई भी व्यक्ति जीत से वंचित रह गया।

– कांग्रेस भी 2005 में जीतीं 9 सीटों में से 2010 के इन चुनावों में 4 सीटों पर रहकर दुर्गति की हालत में पहुंची।

– मजा यह है कि कांग्रेस ने श्रीमती सोनिया और राहुल गांधी को लेकर जिन–जिन सीटों पर प्रचार कराया वहां वह एक भी सीट नहीं जीत पाई।
– पहली बार वामपंथी पार्टियों– सीपीआई, सीपीआई (एम) और सीपीआई (एमएल) ने मिलकर ये चुनाव लड़े वहां बिहार विधानसभा चुनाव के इतिहास में उन्हें पराजय का ही मुंह देखना पड़ा, केवल 1 सीट पर सीपीआई जीत पाई।

– 'तेगडा' सीट कभी बिहार का लेनिनगार्ड समझी जाती थी और 48 वर्षों से इस वामपंथी पार्टियों का कब्जा था, परन्तु यहां भी भाजपा उम्मीदवार ने अंततः इन चुनावों में उनका लेनिनगार्ड तहस–नहस कर दिया।

efgyk ekpkZ ij

– भाजपा ने 13 महिलाओं का उम्मीदवार बनाया, जिनमें से 11 महिलाएं जीतीं।
– कुल 34 महिलाएं जीतीं, जिनमें से एक निर्दलीय थी और शेष सभी एनडीए उम्मीदवार हैं। किसी अन्य दल की कोई एक भी महिला विजयी होने में असमर्थ रही।
– 53 वर्षों के बिहार विधानसभा के इतिहास में महिला प्रतिनिधियों का यह सर्वश्रेष्ठ रिकार्ड है, जो इस हाल के विधानसभा चुनावों में उन्होंने 34 सीटों पर कब्जा कर के दिखाया है। स्पष्ट है कि यह एनडीए के ही प्रयासों का फल है।
– भारत की स्वतंत्रता के बाद पहली बार पुरूषों की तुलना में महिलाओं की भागीदारी पांच प्रतिशत अंक तक अधिक रही है। यह विशाल परिवर्तन न केवल पंचायती राज संस्था में 50 प्रतिशत आरक्षण, कन्याओं के लिए साईकल योजना या 'अक्षर अंचल' का नतीजा है बल्कि व्यस्क मातृत्व के लिए समर्पित साक्षरता कार्यक्रम का फल भी है। मूल रूप से यह प्रदेश ढांचे के बेहतर कामकाज का परिणाम है जिससे महिलाओं को पुरूषों से भी अधिक लाभ प्राप्त होता है।

Hkktik dks vYila[;dksa ds okV ls iekf.kr gkrk gS fd ^vYila[;d Qkfc;k* lekIr gks x;k gS

– मुस्लिम बहुत 51 विधानसभा खण्डों में से भाजपा–जद(यू) ने 40 सीटों पर विजय प्राप्त की है।
– इनमें 27 सीटों पर अकेले भाजपा उम्मीदवार सफल रहे।
– इन अल्पसंख्यक इलाकों में अधिकांश उम्मीदवार 10000 से अधिक वोटों से जीते।
– सीमांचल जिलों के अन्तर्गत आने वाले 16 विधानसभा खण्डों में अकेले भाजपा ने 10 सीटें जीतीं। जद(यू) लोजपा, कांग्रेस ने दो–दो सीटों पर विजय प्राप्त की जबकि राजद कोई सीट नहीं जीत पाया।
– बिहार के निम्नलिखित 6 जिलों में अल्पसंख्यक जनसंख्या का काफी बड़ा हिस्सा विद्यमान है। ये जिले अधिकांशतः बिहार के पूर्वी गलियारे में पड़ते हैं। जिले का नाम, इसमें अल्पसंख्यक जनसंख्या का आबाद, भाजपा द्वारा लड़ी सीटों की संख्या, जीतें सीटों की संख्या और साथ ही कितने अंतर से सीटें जीतीं, उनका चार्ट नीचे दिया गया हैः

Øe l-	ftys dk uke	efLye okVksa dk ifr'kr	Hkktik }kjk yMh lhVs	Hkktik }kjk thrh lhVs	thr@gkj dk vkSlr vrj
1	कटिहार	42.8	5	5	15,000
2	अररिया	41.2	5	4	17,000
3	पूर्णिया	36.9	5	4	18,000
4	दरभंगा	22.8	6	6	14,000
5	प. चम्पारन	21.5	3	3	22,000
6	सीतामढ़ी	21.2	4	4	23,000

– आमूर सीट के भाजपा उम्मीदवार सबा जाफर ने लगभग 20,000 वोटों के काफी बड़े अंतर से एनसीपी के नामजद और पूर्व अल्पसंख्यक नेता तारिक अनवर द्वारा नियुक्त उम्मीदवार को हराया। ■

(लेखक भाजपा के राष्ट्रीय प्रवक्ता व सांसद हैं)

भाजपा में कार्यकर्ता सर्वोपरि दायित्व : नितिन गडकरी

l:tho dqekj flUgk] Hkksiky ls ykSVdj

Xत 29 नवंबर, 2010। यह तारीख भारतीय जनता पार्टी के लिए ही नहीं भारतीय राजनीति के लिए चिरस्मरणीय रहेगा। इस दिन मध्यप्रदेश की राजधानी भोपाल के जम्बूरी मैदान पर इतिहास रचा गया। प्रदेश के पहले गैर कांग्रेसी मुख्यमंत्री के रूप में सत्ता में पांच साल पूरे करने वाले भाजपा नेता श्री शिवराज सिंह चौहान के सम्मान में आयोजित 'कार्यकर्ता गौरव दिवस' कार्यक्रम में ढाई लाख कार्यकर्ता जुटे। ऐसा माना जा रहा है कि आज तक किसी राजनीतिक दल के इतने कार्यकर्ताओं का कभी समागम नहीं हुआ। आयोजन में प्रदेश के नई–पुरानी पीढ़ी के अधिकांश नेता उपस्थित थे। भव्य मंच पर आसीन थे भाजपा संसदीय दल के अध्यक्ष श्री लालकृष्ण आडवाणी, भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नितिन गडकरी, पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष सर्वश्री वेंकैया नायडू, राजनाथ सिंह, लोकसभा में विपक्ष की नेता श्रीमती सुषमा स्वराज, राज्यसभा में विपक्ष के नेता श्री अरुण जेटली, राष्ट्रीय महासचिव सर्वश्री थावरचंद गहलोत, नरेन्द्र सिंह तोमर, अनंत कुमार (प्रदेश प्रभारी मध्यप्रदेश), राष्ट्रीय महासचिव (संगठन) श्री रामलाल, राष्ट्रीय सह महासचिव (संगठन) श्री सौदान सिंह, मध्यप्रदेश भाजपा अध्यक्ष श्री प्रभात झा, मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान, पूर्व मुख्यमंत्री सर्वश्री सुंदरलाल पटवा, कैलाश जोशी एवं बाबूलाल गौर, अनुसूचित जनजाति मोर्चा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री फग्गन सिंह कुलस्ते, अल्पसंख्यक मोर्चा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री तनवीर अहमद, मीडिया प्रकोष्ठ के राष्ट्रीय संयोजक श्री श्रीकांत शर्मा, मध्यप्रदेश भाजपा के पूर्व अध्यक्ष सर्वश्री सत्यनारायण जटिया, लक्ष्मीनारायण पांडेय, विक्रम वर्मा, श्री कैलाश सारंग, श्री नारायण प्रसाद गुप्त, प्रदेश महामंत्री (संगठन) श्री माखन सिंह, प्रदेश सह महामंत्री (संगठन) सर्वश्री भगवत शरण माथुर एवं अरविंद मेनन, प्रदेश उपाध्यक्ष सर्वश्री रघुनंदन शर्मा, भूपेन्द्र सिंह, रामपाल सिंह, प्रदेश महामंत्री श्रीमती माया सिंह, श्री राकेश सिंह, श्री कुंवर सिंह, प्रदेश कोषाध्यक्ष श्री चेतन कश्यप, प्रदेश प्रवक्ता श्री विजेश लुनावत, प्रदेश युवा मोर्चा अध्यक्ष श्री जीतू जिराती, प्रदेश महिला मोर्चा अध्यक्ष श्रीमती नीता पटेरिया, प्रदेश

आडवाणी ने की शिवराज और प्रभात की तारीफ

अपने उद्बोधन में भाजपा संसदीय दल के अध्यक्ष श्री लालकृष्ण आडवाणी ने 'कार्यकर्ता गौरव दिवस' पर आयोजित भव्य एवं अनुशासित कार्यक्रम के लिए मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान और मध्यप्रदेश भाजपा अध्यक्ष श्री प्रभात झा का नाम लेकर तारीफ की।

मंत्रों के बीच शिवराज को पहनाई पांच रंगों की माला

कार्यकर्ता गौरव दिवस पर कार्यकर्ताओं की ओर से भाजपा संसदीय दल के अध्यक्ष श्री लालकृष्ण आडवाणी, भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नितिन गडकरी, पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष सर्वश्री वेंकैया नायडू, राजनाथ सिंह, लोकसभा में विपक्ष की नेता श्रीमती सुषमा स्वराज, राज्यसभा में विपक्ष के नेता श्री अरुण जेटली एवं राष्ट्रीय महामंत्री श्री अनंतकुमार ने मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान को पांच रंग के फूलों की विशाल माला पहनाकर स्वागत किया। एक ओर राष्ट्रीय पदाधिकारी विशाल माला और शाल ओढ़ाकर मुख्यमंत्री का सम्मान कर रहे थे। वहीं धर्माचार्यों ने अपने मंत्रोच्चारण से पूरे माहौल को धार्मिक कर दिया। सम्मान स्वरूप श्री चौहान को प्रतीक स्वरूप भारत माता का चित्र और श्रीफल भी भेंट किया गया।

किसान मोर्चा अध्यक्ष श्री बंसीलाल गुर्जर, प्रदेश अनुसूचित जाति मोर्चा अध्यक्ष श्री ओमप्रकाश धुर्वे, प्रदेश अल्पसंख्यक मोर्चा अध्यक्ष श्री हिदायतुल्ला खान, प्रदेश मीडिया प्रकोष्ठ के संयोजक डॉ. हितेश वाजपेयी सहित वरिष्ठ कई पार्टी नेतागण। कार्यक्रम का संचालन मध्यप्रदेश भाजपा के महामंत्री श्री नंदकुमार सिंह चौहान ने किया।

रैली में शामिल होने के लिए लोगों की भीड़ सुबह से ही जुटनी शुरू हो गई थी। कार्यक्रम के प्रारंभ में अतिथियों ने डॉ. श्यामाप्रसाद मुकर्जी, पं. दीनदयाल उपाध्याय एवं कुशाभाऊ ठाकरे के चित्र के समक्ष दीप प्रज्जवलित कर कार्यक्रम का औपचारिक उद्घाटन किया। वंदे मातरम् के गायन के साथ गौरव दिवस कार्यक्रम भारी अभूतपूर्व उत्साह के साथ आरंभ हुआ। प्रदेश अध्यक्ष श्री प्रभात झा और मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने अतिथियों को पुष्पगुच्छ भेंट कर स्वागत किया।

भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नितिन गडकरी ने विश्वास के साथ कहा कि देश में यदि किसी राजनैतिक दल में लोकतांत्रिक प्रवृत्तियां और तासीर है तो वह भारतीय जनता पार्टी है। यहां अपने कार्य के बल पर अदना सा कार्यकर्ता मुख्यमंत्री, प्रदेश अध्यक्ष और राष्ट्रीय अध्यक्ष यहां तक की प्रधानमंत्री भी बन सकता है। ऐसा देश के सबसे बडे माने जाने वाले दल कांग्रेस में कभी संभव नहीं है। उन्होंने शिवराजसिंह चौहान की जनोन्मुखी नीतियों और मेहनतकश परिवारों, महिलाओं, युवकों के हित में संचालित विकास कार्यक्रमों की भूरि–भूरि प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि मंत्री, सांसद, विधायक और पदाधिकारी को तो भूतपूर्व बनना ही पड़ता है लेकिन कार्यकर्ता दायित्व हमेशा बना रहता है, वह कभी पूर्व नहीं होता है और पार्टी संगठन का आधार बनता है।

राजनीतिक शुचिता और सुशासन भाजपा की सर्वोच्च प्राथमिकता है : लालकृष्ण आडवाणी

भाजपा संसदीय दल के अध्यक्ष श्री लालकृष्ण आडवाणी ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि भारतीय जनता पार्टी समाज सेवा और समाज में बेहतर परिवर्तन लाने के लिए राजनीति में आई है। मध्यप्रदेश भारतीय जनता पार्टी ने कार्यकर्ता गौरव दिवस आयोजित करके एक अनोखी और देश में लोकतंत्र की बेहतरी के लिए विलक्षण पहल की है। इसके लिए प्रदेश अध्यक्ष प्रभात झा के प्रयास अभिनंदनीय हैं। श्री आडवाणी ने कहा कि राजनीति में शुचिता और शासन में

राष्ट्रीय महामंत्री (संगठन) श्री

भाजपा के राष्ट्रीय महामंत्री (संगठन) श्री रामलाल ने कार्यकर्ता गौरव दिवस श्री प्रभात झा के नाम संदेश में कहा कि मध्यप्रदेश का संगठन व शासन पूरे देश चौहान ने मुख्यमंत्री के रूप में निरंतर पांच वर्ष पूरे किये है और इसका श्रेय

सुशासन की कल्पना को देश में भाजपा ने ही धरातल पर उतारा है। 1952 से ही जनसंघ कार्यकर्ता हमारे आदर्श रहे हैं। पं.दीनदयाल उपाध्याय के बाद मुझे यदि कोई नाम याद आता है तो वह मध्यप्रदेश के पितृ पुरुष कुशाभाऊ ठाकरे ही हैं। शासन में विनम्रता का समावेश शासन को श्रेष्ठ बनाता है। उन्होंने मध्यप्रदेश सरकार के मुख्यमंत्री शिवराजसिंह चौहान और प्रभात झा को इस अनोखे कार्यक्रम की सफलता के लिए बधाई दी और कहा कि दो लाख छत्तीस हजार कार्यकर्ताओं का प्रदेश के कोने कोने से आना अपने आप में एक उपलब्धि है, जो भारतीय जनता पार्टी को प्रतिनिधित्व पूर्ण बनाती है।

प्रदेश भर से 42 सांस्कृतिक झांकियां आईं

मध्यप्रदेश की समृद्ध सांस्कृतिक विकास और शौर्य परंपराओं को मुखरित करती 42 झांकियां तैयार की गई थी ताकि किशोरों और युवा पीढ़ी को प्रेरणा मिले। पार्टी के कार्यकर्ताओं ने यह झांकियां तैयार की थीं। भोपाल जिले से 'भोजराज से शिवराज तक' झांकी तैयार की थी, तो ओरछा के रामराजा' भी यहां आए थे। धार से मां सरस्वती की झांकी आई और उज्जैन से विक्रमादित्य और महाकाल आए थे। मुरैना से रामप्रसाद बिस्मिल की झांकी आई और ग्वालियर से लक्ष्मीबाई की। शिवपुरी वाले तात्या टोपे की झांकी लेकर आए थे। बड़वानी की झांकी में जननायक टंटया भील की वीरगाथा गुंफित की गयी थी। बैतूल की झांकी में मां तात्ती की अविरल धारा दिखायी गयी थी। बालाघाट, सीधी, अनुपपुर, शहडोल तथा बैगा, गौड़, करमा, भील और बुन्देलखण्ड तथा मालवा, निमाड़ के दल भी आकर्षण का केन्द्र रहे।

यूपीए सरकार और कांग्रेस भटकाव का शिकार : वेंकैया नायडू

भाजपा के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री वेंकैया नायडू ने कहा कि मध्यप्रदेश प्रगति की नई ऊचाइयां छू रहा है। श्री वेंकैया ने अपने खास अंदाज में कहा कि बिहार में कांग्रेस के 'थ्रीजी' गए थे। इनमें सोनिया जी, राहुल जी और मनमोहन जी शामिल थे। हालांकि उन्हें चार सीटें मिलीं। अब पता नहीं यह 'चौथा जी' कौन है? जनता ने कांग्रेस को पूरी तरह नकार दिया। यह कांग्रेस और यूपीए के लिए जनता का संदेश है भारतीय जनता पार्टी और सहयोगी दल की सरकारों का संदेश सिर्फ जनता की सेवा और क्षेत्र का विकास है। मध्यप्रदेश इस मामले में उल्लेखनीय ढंग से आगे बढा है।

कार्यकर्ता गौरव दिवस समारोह कार्यकर्ताओं का दुर्लभ महासंगम : राजनाथ सिंह

भाजपा के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री राजनाथ सिंह ने कार्यकर्ता गौरव को संबोधित करते हुए कहा कि राजनैतिक जीवन में जितने भी कार्यकर्ता सम्मेलन देखे हैं। भोपाल में आयोजित कार्यकर्ता गौरव दिवस का महासंगम एक दुर्लभ संयोग है। श्री राजनाथ सिंह ने डॉ. मनमोहन सिंह और श्रीमती सोनिया गांधी को आड़े हाथों लेते हुए कहा कि कांग्रेस अध्यक्ष चौथी बार कांग्रेस की प्रमुख बनी है, लेकिन उन्होंने अपने भाषण में भ्रष्टाचार, कारगिल शहीदों की आवास कालोनी के घोटाले, टूजी स्प्रेक्ट्रम के घोटाले के बारे में एक शब्द नहीं बोला। इससे स्पष्ट है कि भ्रष्टाचार अब कांग्रेस के लिए शिष्टाचार बन गया है। उन्होंने मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री श्री शिवराजसिंह चौहान के कुशल नेतृत्व की सराहना करते हुए कहा कि लोकसेवा गारंटी कानून से

गठन) श्री रामलाल का संदेश

र्ता गौरव दिवस के अवसर पर मुख्यमंत्री श्री शिवराजसिंह चौहान एवं प्रदेश अध्यक्ष
शासन पूरे देश को संदेश देने में सफल हुए है। बहुत–बहुत बधाई। शिवराजसिंह
ौर इसका श्रेय उन्होंने मध्यप्रदेश की जनता व कार्यकर्ताओं को दिया।

जनता को सुकून मिलेगा और प्रशासन में जवाबदेही की भावना विकसित होगी। किसानों को 3 प्रतिशत ब्याज पर कर्ज ऐसा जनोन्मुखी कार्य है कि जिससे प्रदेश के करोड़ों किसानों को लाभ पहुंचा है।

देवदुर्लभ कार्यकर्ताओं को विनम्र प्रणाम : सुषमा स्वराज

लोकसभा में विपक्ष की नेता श्रीमती सुषमा स्वराज ने कहा कि पार्टी के कार्यकर्ता देवदुर्लभ है उनकी अपनी निजी कोई महत्वाकांक्षा नहीं होती। उनका एकमात्र उद्देश्य जनसेवा है। कार्यकर्ताओं की सम्मान की रक्षा की जाना चाहिए। श्रीमती सुषमा स्वराज ने श्री शिवराजसिंह चौहान को पार्टी संगठन का विनम्र, कर्त्तव्यपरायण और साहसी सिपाही बताया। उन्होंने कहा कि प्रदेश की जनता के लिए वे सहज, सरल और सुलभ है। जनता की परेशानी उनकी विनम्रता से अपने आप कम हो जाती है। दोबारा सत्ता में पार्टी के लौटने के लिए शिवराजसिंह चौहान के व्यक्तिगत गुणों, उनकी सरलता और विनम्रता को भी कम नहीं आंका जा सकता है।

यूपीए के विकल्प के रूप में निगाहें भाजपा पर टिकी है : अरुण जेटली

कार्यकर्ता गौरव दिवस की कल्पना को एक विलक्षण प्रयास बताते हुए राज्यसभा में विपक्ष के नेता श्री अरूण जेटली ने मध्यप्रदेश भारतीय जनता पार्टी के प्रयासों की भूरि–भूरि प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि चुनाव जीतना भले ही सरल हो लेकिन दोबारा सत्ता में आना कठिन होता है। यह करके मध्यप्रदेश इकाई ने इतिहास रचा है। कांग्रेस भ्रष्टाचार के चक्रव्यूह में ऐसी फंस गयी है कि उसे बाहर निकलने का रास्ता असंभव हो गया है। भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ता, यूपीए के विकल्प के रूप में भारतीय जनता पार्टी को स्थापित करने के लिए कटिबद्ध हों और आने वाली चुनौती के लिए अभी से तैयारी में जुट जाएं।

दिल्ली फतह का संदेश मध्यप्रदेश के गांव की गलियों से आयेगा : अनंत कुमार

भाजपा के राष्ट्रीय महासचिव और मध्यप्रदेश के प्रदेश प्रभारी श्री अनंत कुमार ने कार्यकर्ता गौरव दिवस पर कार्यकर्ताओं का अभिनंदन करते हुए कहा कि यह पार्टी के कार्यकर्ताओं के अभिनंदन के साथ मध्यप्रदेश की 7 करोड़ जनता का वंदन है। बिहार में मुख्यमंत्री नीतीश कुमार और उपमुख्यमंत्री भाजपा नेता सुशील मोदी ने जो उल्लेखनीय सफलता प्राप्त की है उसे हमें मध्यप्रदेश में दोहराना है। मध्यप्रदेश के गांव की गलियों से ही दिल्ली फतह का संदेश आगे जायेगा।

भारतीय जनता पार्टी के jk"Vªh; egklfpo loJh FkkojpUn xgykr vkj ujUæflag rkej ने कहा कि शिवराजसिंह चौहान के नेतृत्व में स्वर्णिम मध्यप्रदेश का सपना साकार हो रहा है।

कार्यकर्ता संगठन की पूंजी है : प्रभात झा

भारतीय जनता पार्टी, मध्यप्रदेश अध्यक्ष श्री प्रभात झा ने कार्यकर्ताओं का विनम्रतापूर्वक अभिवादन करते हुए कहा कि मध्यप्रदेश में पार्टी के कार्यकर्ताओं ने इतिहास रचा है। उनका कृतित्व वंदनीय है यहां सभी पदाधिकारी सिर्फ कार्यकर्ता ही है। कार्यकर्ताओं ने मध्यप्रदेश की माटी पर दो मिथक तोड़े है। प्रदेश में पांच वर्ष तक एक ही मुख्यमंत्री ने स्थिर प्रशासन दिया है और दोबारा पार्टी की सरकार की स्थापना भी की है। उन्होंने कहा कि कार्यकर्ता हमारी पूंजी है उसी ने जनहितैषी कार्यक्रमों को जमीन पर उतारने में मदद की है और वे जनता के प्रति संवेदनशील रहे है। कांग्रेस मध्यप्रदेश में लुप्त, गुप्त और सुप्त हो चुकी है। मध्यप्रदेश में भाजपा संगठन ने आत्म प्रचार की शैलियों को नियंत्रित किया है। होर्डिंग संस्कृति समाप्त हो चुकी है अब चरणवंदना भी न हो इसके लिए कार्यकर्ताओं को प्रेरित किया जा रहा है। प्रदेश में पार्टी के आदर्शों के अनुरूप पार्टी को सर्वव्यापी, सर्वस्पर्शी बनाने के लिए अनवरत प्रयास किये जायेंगे।

कार्यकर्ता २०१४ की कसौटी पर खरे उतरेंगे : शिवराजसिंह चौहान

कार्यकर्ता गौरव दिवस के अवसर पर राष्ट्रीय नेतृत्व प्रदेश पदाधिकारियों और कार्यकर्ताओं द्वारा दिये गये सम्मान से अभिभूत होकर मुख्यमंत्री श्री शिवराजसिंह चौहान ने सभी का हार्दिक अभिवादन किया और कहा कि वे अनवरत जनता की अपेक्षाओं पर खरे उतरने के लिए कटिबद्ध होंगे। कार्यकर्ताओं के सम्मान को बढ़ाया जायेगा। उन्होंने राष्ट्रीय नेतृत्व को भरोसा दिलाया कि 2013 में विधानसभा चुनाव में पार्टी को विजयी बनाते हुए 2014 में लोकसभा चुनाव में मध्यप्रदेश पीछे नहीं रहेगा।

श्री शिवराजसिंह चौहान ने समारोह के अवसर पर घोषणा की कि पांचवीं उत्तीर्ण करके छठवीं कक्षा में प्रवेश करने वाले लड़कों को भी साइकिल दी जाएंगी। भांजियों को मिलने वाली सुविधाएं अब भांजों को भी देने की सरकार उदारता बरतेगी। आने वाले सत्र में गणवेश भी छात्रों को दी जायेगी। मध्यप्रदेश की जो विकास दर शून्य प्रतिशत होती थी अब 8.6 प्रतिशत हो गयी है।

पूर्व योजना-पूर्ण योजना की साकार अभिव्यक्ति

- सभा स्थल का नामकरण कुशाभाऊ ठाकरे नगर किया गया था।
- आगन्तुकों के लिये 6 लाख वर्ग फुट का पंडाल बनाया गया है जिसमें प्रवेश के लिये सात प्रवेश द्वार बनाए गए थे। प्रवेश द्वारों का नामकरण पार्टी के वरिष्ठ दिवंगत नेताओं की याद में किया गया था।
- कार्यकर्ता गौरव दिवस समारोह के लिये विशाल, उन्नत 90 फुट X 60 फुट का मंच तैयार किया गया था। इसके दोनों ओर एलईडी स्क्रीन लगाये गये थे जिन पर दिन के प्रकाश में भी कार्यकर्ता गौरव दिवस की झांकी और कार्यवाही दिखायी दे रही थी।
- राजमाता विजयाराजे सिंधिया की स्मृति में अन्नपूर्णा परिसर बनाया गया था। भोजन व्यवस्था को ग्यारह संभागों में बांटा गया था।
- सभा स्थल पर 15 गुब्बारे बुलंदियां छू रहे है, जिन पर कार्यकर्ता के रूप में शिवराजसिंह चौहान को सेवा पथ पर अग्रसर चित्रित किया गया था।
- रैली स्थल को वरिष्ठ पार्टी नेताओं सर्वश्री अटल बिहारी वाजपेयी, लालकृष्ण आडवाणी, नितिन गडकरी, वेंकैया नायडू, राजनाथ सिंह, श्रीमती सुषमा स्वराज, श्री अरुण जेटली, श्री अनंत कुमार एवं श्री शिवराज सिंह चौहान के बड़े–बड़े कटआऊट से सजाया गया था।
- प्रत्येक कार्यकर्ता को श्री प्रभात झा द्वारा लिखित पुस्तिका ''भारतीय जनता पार्टी का कार्यकर्ता होना गौरव की बात'' वितरित की गई।
- सीधी से आये लोक नर्तक दल ने सैला नृत्य प्रस्तुत कर दर्शकों को आत्मविभोर कर दिया। कई कार्यकर्ता अपने क्षेत्र की पारंपरिक वेशभूषा में आए थे।
- कार्यक्रम के प्रारंभ में सुहासिनी जोशी ने अपनी टीम सहित –'दिल दिया है जान भी देंगे, जहां डाल–डाल पर सोने की चिड़िया करती है बसेरा, मेरे देश की धरती सोना उगले' जैसे अनेक देशभक्ति के गीत गाकर कार्यकर्ताओं के मन में देशप्रेम का जज्बा भर दिया।
- प्रख्यात धर्माचार्य श्री राजेश्वर राव मुलगांवकर ने 'शिव तांडव' की प्रेरक प्रस्तुति से पूरे सभास्थल को अध्यात्ममय कर दिया। कार्यक्रम के शुभारंभ अवसर पर भी पंडितों द्वारा मंत्रोच्चार कर महादेव का आह्वान किया गया।
- पार्टी नेताओं के संबोधन के दौरान बीच–बीच में पटाखों की आवाज गूंजती रही तो भाजपा और श्री शिवराज सिंह चौहान के जयघोष भी जमकर लगे।

सभा स्थल पर चार प्रेरक प्रदर्शनियों का आयोजन

प्रदर्शनी के लिये चार डोम बनाये गये थे, जिनमें भारतीय जनता पार्टी के विकास की गौरव गाथा मनोहारी ढंग से अंकित की गयी थी। पहले डोम में भारतीय जनता पार्टी के विकास का सूत्र भारतीय जनसंघ से भारतीय जनता पार्टी के सर्वव्यापी विस्तार तक की घटनाओं का समावेश किया गया था। दूसरे में भारतीय जनता पार्टी के सत्ता प्रवेश से विकास की गाथा सम्मिलित की गयी थी। तीसरे खण्ड में किसान के बेटा का गांव की गलियों से बढकर सेवा पथ पर चलकर राजनीति में प्रवेश और सत्ता को सामाजिक परिवर्तन का साधन बनाने वाले शिवराजसिंह चौहान के योगदान को मुखरित किया गया था। सुशासन की दिशा में हुए उपक्रमों का लेखा–जोखा अंतिम प्रभाग में प्रदर्शित किया था। ■

(इनपुट : मध्य प्रदेश मीडिया प्रकोष्ठ)

साक्षात्कार

समावेशी विकास मॉडल के आधार पर मध्यप्रदेश आगे बढ़ रहा है : शिवराज सिंह चौहान

संवदेनशील प्रशासक एवं विनम्र स्वभाव के धनी भाजपा नेता श्री शिवराज सिंह चौहान ने 29 नवंबर को मध्यप्रदेश के पहले गैर कांग्रेसी मुख्यमंत्री के रूप में पांच साल पूरा किया। इस अवसर पर श्री चौहान ने 'कमल संदेश' से विशेष बातचीत में दावा किया कि विकास दर के मामले में मध्यप्रदेश बीते दो वर्षों में राष्ट्रीय औसत से भी आगे रहा है और निश्चय ही कौशल विकास के क्षेत्र में मध्यप्रदेश एक आदर्श राज्य बनकर उभरेगा। हम यहाँ बातचीत के संपादित अंश प्रकाशित कर रहे हैं :

मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री के रूप में पांच वर्ष पूरा करने पर बधाई। इन पांच वर्षों के कालखंड को आप किस रूप में देखते हैं?

बधाई के लिये धन्यवाद। इस पांच वर्ष के कालखंड को मैं मध्यप्रदेश के विकास के इतिहास में एक स्वर्णिम अध्याय मानता हूं। इस दौरान मध्यप्रदेश में सभी प्रमुख क्षेत्रों में अभूतपूर्व उपलब्धियां हासिल की गई। विकास दर के मामले में मध्यप्रदेश बीते दो वर्षों में राष्ट्रीय औसत से भी आगे रहा है।

इस तरह अधोसंरचना के विकास में हमने एतिहासिक उपलब्धियां हासिल कर ऐसी स्थितियां निर्मित की है कि अब देश विदेश के बड़े उद्योगपति और निवेशक मध्यप्रदेश में निवेश करने के लिए आतुर हैं। हाल ही में खजुराहो में आयोजित ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट में उन्होंने मध्यप्रदेश की क्षमताओं और यहां की शासन व्यवस्था पर भरोसा जताते हुए 2 लाख 36 हजार करोड़ रूपये से भी ज्यादा का निवेश करने के लिए करार किया है।

सबसे बड़ी बात तो यह है कि बीते पांच वर्षों में हम समाज के सभी वर्गों में प्रदेश के विकास में सक्रिय रूप से सहभागी बनने की ललक और जूनून पैदा करने में कामयाब हो सके। मेरे द्वारा शुरू किये गये 'आओ बनाए अपना मध्यप्रदेश' अभियान के प्रति लोगों ने जो उत्साह दिखाया है और इसके संदेश को जिस गहराई से आत्मसात किया है उससे स्पष्ट होता है कि आज समाज का हर वर्ग प्रदेश की तरक्की में अपनी तरक्की देखते हुये इसमें पूरी तरह सक्रियता से सहभागी बनने को तत्पर है।

अपने कार्यकाल में सरकार की किन उपलब्धियों को प्रमुखता देंगे?

उपरोक्त उपलब्धियां तो प्रमुख रही ही हैं, मैं इस बात को बहुत संतोष के साथ कह सकता हूं कि हम अधोसंरचना के साथ–साथ सामाजिक क्षेत्र पर भी समान रूप से ध्यान दे सकें और उन वर्गों की बेहतरी पर हमले ध्यान दिया जिन पर कभी किसी सरकार ने पहले नहीं सोचा। इन लोगों में कोटवार, हाथठेला चालक, तुलावटी, हम्माल, घरों में काम करने वाली महिलाएं, असंगठित क्षेत्र के मजदूर, खेतीहर मजदूर आदि शामिल हैं। हमने निर्माण कार्य में लगे मजदूरों को सामाजिक सुरक्षा प्रदान करने और गरिमामय जीवन यापन करने में मदद करने के लिये प्रभावी कदम उठाये हैं। गरीबों को कम मूल्य पर पर्याप्त अनाज उपलब्ध कराने के लिए अन्नपूर्णा योजना लागू की है।

खेती को मुनाफे का धंधा और आपदाग्रस्त किसानों को बेहतर राहत पहुंचाने के लिये हमने जो प्रयास किये हैं उनकी सफलता को मैं महत्वपूर्ण उपलब्धि मानता हूं। किसानों को तीन प्रतिशत ब्याज दर पर कृषि ऋण देने का हमारा फैसला खेती को मुनाफे का धंधा बनाने की दिशा में एक बहुत महत्वपूर्ण कदम है।

हमने महिला सशक्तिकरण को विशेष रूप से महत्व दिया है। संस्थागत प्रसव को बढ़ाकर शिशु और मात मृत्यु दर बढ़ाने के लिये लागू की गई योजनाएं मध्यप्रदेश में बहुत सफलता से क्रियान्वित की गई, जिसके चलते हम संस्थागत

प्रसव की संख्या 26 से बढ़ाकर 81 प्रतिशत करने में सफल हुए हैं। कन्या जन्म के प्रति समाज के दृष्टिकोण में सकारात्मक बदलाव की दृष्टि से लागू की गई लाड़ली लक्ष्मी योजना इस दिशा में मील का पत्थर साबित हुई है। यह ऐसी अभिनव योजना है जिसका अनेक राज्यों में अनुकरण किया है और अनेक राज्य इसे अपने यहां लागू करने को उत्सुक हैं। गरीब परिवारों की कन्याओं के विवाह में आने वाली आर्थिक कठिनाईयों को देखते हुए हमने मुख्यमंत्री कन्यादान योजना लागू की है, जिससे गरीब परिवारों को बहुत मदद मिली है।

पंचायतों और स्थानीय निकायों में पचास प्रतिशत स्थान महिलाओं के लिये आरक्षित करने वाला मध्यप्रदेश देश का पहला राज्य है। हमने शिक्षकों के पचास प्रतिशत पद, शासकीय सेवाओं में तीस प्रतिशत पद और पुलिस बल में दस प्रतिशत पद महिलाओं के लिए आरक्षित किये हैं। कन्या शिक्षा को प्रोत्साहन देने की हमारी योजनाएं बहुत सफल रही हैं। इन प्रयासों के चलते प्रदेश में महिलाओं का मनोबल बढ़ा है और उनकी सामाजिक आर्थिक स्थिति में उल्लेखनीय सुधार आना शुरू हुआ है। सामाजिक क्षेत्र की इन उपलब्धियों से मुझे विशेष संतोष मिला है।

ऐसा कहा जा रहा है कि मध्यप्रदेश विकास की ओर तीव्र गति से चला है, अब इसकी गिनती बीमारू प्रदेशों में नहीं की जा सकती। देश के अन्य प्रदेशों ने भी विकास की ओर कदम बढ़ाये हैं। मध्यप्रदेश विकास मॉडल कैसे दूसरे राज्यों से भिन्न है?

जी हां, मध्यप्रदेश विकास के राजमार्ग पर जिस तेजी से सरपट दौड़ रहा है उसे देखकर अब इसे बीमारू राज्यों की श्रेणी में रखना अनुचित है। यह सही है कि देश के अन्य प्रदेश भी विकास कर रहे हैं, लेकिन मध्यप्रदेश में जो विकास हो रहा है वह विशेष महत्व रखता है। इसके कई कारण हैं। अनेक कारणों से मध्यप्रदेश अपनी स्थापना के समय से ही विकास के मामले में पीछे रहा है। सन् 1956 में भाषीय आधार पर राज्यों के गठन के बाद जो हिस्सा छूट गया उसे मिलाकर एक राज्य बना दिया गया जिसे मध्यप्रदेश नाम दे दिया गया। इसके विभिन्न अंचलों की सांस्कृतिक धाराएं अपने निकटतम राज्यों की संस्कृति से जुड़ी रही और लोगों में अन्य राज्यों की तरह 'अपना प्रदेश' होने का जज्बा कम रहा। जितने भी मुख्यमंत्री बने और जितनी भी सरकारें गठित हुई उन्होंने अपनी–अपनी क्षमता और सोच के अनुसार प्रदेश के विकास के लिए श्रेष्ठतम कार्य करने का प्रयास किया, लेकिन मध्यप्रदेश के सांस्कृतिक और भावनात्मक एकीकरण की तरफ न जाने क्यों ध्यान नहीं दिया जा सका। मुझे हर बात का संतोष है कि मैंने दिशा में प्रयास किये हैं जो सफल भी हो रहे हैं।

जहां तक मध्यप्रदेश के विकास मॉडल की बात है तो यह समावेशी विकास का मॉडल है जो समाज की सक्रिय भागीदारी से सबके सहयोग से सबके विकास पर आधारित है। यही इसकी विशेषता है और यही आज के समय की मांग है। हमारी लाडली लक्ष्मी तथा लोकसेवा गारंटी अधिनियम को मध्यप्रदेश के विकास मॉडल के रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है।

अपने पांच वर्ष के कार्यकाल में आप केन्द्र-राज्य संबंधों को किस रूप में कैसा देखते हैं, इस संबंध को कैसे जीवंत और सुदृढ़ किया जा सकता है?

बीते पांच सालों में केन्द्र–राज्य संबंधों को लेकर मेरा अनुभव ठीक नहीं रहा है। हमारी संघीय व्यवस्था में केन्द्र शासन से यह अपेक्षा की जाती है कि वह सभी राज्यों के साथ समान व्यवहार करें और विकास को राजनीति से ऊपर रखें। बात चाहे कोयला आवंटन की हो या अनाज, उर्वरक, इंदिरा आवास, प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना, सुरक्षा अथवा राष्ट्रीय राजमार्गों के रखरखाव की। मैंने महसूस किया कि केन्द्र सरकार राजनैतिक आधार पर मध्यप्रदेश के साथ भेदभाव कर रही है। मैंने तो कोयले के मामले में किये जा रहे भेदभाव का विरोध करने के लिये खुला आंदोलन तक किया। और भी अनेक ऐसे मुद्दे हैं जिन पर केन्द्र का रूख निष्पक्ष नहीं रहा। मेरा ऐसा मानना है कि लोकतंत्र में न केवल निष्पक्ष होने बल्कि निष्पक्ष दिखने की भी जरूरत है।

यह संबंध जीवंत और सुदृढ़ तब भी हो सकते हैं जब विकास के मामले में राजनीति न हो और केन्द्र सरकार सभी राज्यों के साथ तुलसी के सिद्धांत को मानते हुये समान रूप से व्यवहार करे कि–

''मुखिया मुख सो चाहिए खानपान कहुं एक
पालहि पोसहि सकल अंग तुलसी सहित विवेक''

पिछले पांच वर्षों के कार्यकाल से क्या आप पूरी तरह से संतुष्ट हैं? भविष्य के लिये क्या योजनाएं हैं?

सार्वजनिक जीवन में जनकल्याण का ध्येय लेकर चलने वाले कभी संतुष्ट नहीं हो सकते और उन्हें होना भी नहीं चाहिए। यही बात मुझ पर भी लागू होती है। मेरे लिये आकाश भी सीमा नहीं है। भविष्य की मेरी योजनाओं में मध्यप्रदेश को विकास के मामले में देश का नंबर वन राज्य बनाना सर्वोपरि है। साथ ही मैं खेती को और अधिक लाभकारी बनाने, पर्यावरण को नुकसान किये बिना रोजगारोन्मुख औद्योगिकीकरण की गति तेज करने, प्रदेश की असीम प्राकृतिक संपदा का वैज्ञानिक दोहन कर उसे समग्र विकास

...शेष पृष्ठ 23 पर

कार्यकर्ताबोध सदैव जीवित रहना चाहिए : प्रभात झा

भारतीय जनता पार्टी की मध्यप्रदेश इकाई के अध्यक्ष एवं राज्यसभा सदस्य श्री प्रभात झा कुशल संगठक एवं अपनी बौद्धिक क्षमता के लिए जाने जाते हैं। प्रदेश में 29 नवंबर 2010, 'कार्यकर्ता गौरव दिवस' के रूप में मनाया गया, क्योंकि इसी दिन मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने प्रदेश के पहले गैर कांग्रेसी मुख्यमंत्री के नाते सत्ता में पांच साल पूरे किए। इस अवसर पर भोपाल में आयोजित 'जनता वंदन–कार्यकर्ता अभिनंदन' कार्यक्रम ने इतिहास रच दिया। पूरे देश में पहली बार एक साथ ढ़ाई लाख 'कार्यकर्ताओं' का जुटान हुआ। इस निमित्त श्री झा से नई दिल्ली स्थित उनके निवास पर 'कमल संदेश' प्रतिनिधि ने बातचीत की। प्रस्तुत है संपादित अंश–

सर्वप्रथम 'जनता वंदन-कार्यकर्ता अभिनंदन' जैसे अनूठे कार्यक्रम की भारी सफलता के लिए आपको बधाई। इस कार्यक्रम की क्या विशेषताएं रहीं?

मध्यप्रदेश में पार्टी कार्यकर्ताओं के परिश्रम और पराक्रम को लेकर उनके अभिनंदन का अभूतपूर्व कार्यक्रम किया गया। संगठन का प्रत्येक कार्य बिना कार्यकर्ता के संपन्न नहीं होता है अतः ध्यान में आया कि कार्यकर्ता ही हमारा गौरव है और वही हमारी विचारधारा का जनता के बीच रामसेतु का काम करता है। उसकी संगठन और सरकार से भले ही कोई अपेक्षा न हो परन्तु उसकी उपेक्षा नहीं हो, इसलिए इस कार्यक्रम का नाम 'जनता वंदन–कार्यकर्ता अभिनन्दन' रखा गया। अभी तक के भारत के राजनैतिक इतिहास में कार्यकर्ताओं का इतना विहंगम दृश्य नहीं देखा गया। दूसरी विशेषता यह रही कि एक साथ सामूहिकता का ऐसा दृश्य नहीं देखा गया। सत्ता और संगठन के बीच अद्भुत समन्वय था। संगठन द्वारा अपने मुख्यमंत्री को जननायक बनाने का संगठनात्मक निर्णय इसके पूर्व नहीं किया गया। कार्यक्रम की विशेषता थी अनुशासन, एकजुटता और परिवार भाव, जिसे सभी ने अपनी आंखों से देखा। भाजपा की राजनैतिक शक्ति का सार्वजनिकरण था। 'लीडर' के सामने 'कैडर' उपस्थित था। ढाई लाख से अधिक सक्रिय कार्यकर्ताओं का यह समूह उत्साह से लबरेज था।

मध्यप्रदेश में पिछले सात वर्षों से भाजपा की सरकार है। शिवराज सिंह चौहान ने मुख्यमंत्री के रूप में पांच वर्ष का सफल कार्यकाल पूरा कर लिया है। प्रदेश में सत्ता और संगठन के बीच किस तरह का समन्वय है?

मुख्यमंत्री शिवराज सिंह जी का सदैव कार्यकर्ता बने रहना, संगठन की सफलता है। इस कार्यक्रम में हमने इस संदेश को देने की चेष्टा की कि कार्यकर्ता चाहे जितनी ऊंचाई पर चला जाए पर उसका कार्यकर्ताबोध सदैव जीवित रहना चाहिए। संगठन सत्ता की जननी है और उसे अपने आंचल से सदैव रक्षा करने का काम संगठन को करना चाहिए। सत्ता संस्कारित हो यह चिंता भी संगठन को करनी चाहिए। म.प्र. में यह समन्वय न केवल भाजपा बल्कि अन्य दलों के लिए अनुकरणीय है।

प्रदेश सरकार से पार्टी को किस प्रकार की योजनाओं की अपेक्षा रहती है?

पं. दीनदयालजी ने कहा था, 'समाज के अंतिम व्यक्ति के पांव में फटी बिवाई को जब तक हम भर नहीं कर लेते तब तक हमारी राजनीति का लक्ष्य पूरा नहीं हो जाता।' मुझे यह कहते हुए हर्ष है कि मध्य प्रदेश में भाजपा सरकार और मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान की प्रत्येक सरकारी योजनाएं 'अंत्योदय' से ओतप्रोत है। योजनाएं सभी के लिए और सब योजनाओं के लिए। महिला आरक्षण सहित महिलाओं के लिए एक

नहीं अनेक ऐतिहासिक फैसले मध्यप्रदेश की सरकार ने लिए हैं। मध्यप्रदेश सरकार सामाजिक सुरक्षा का पर्याय बनी है, वहीं हाल ही में लोकसेवा प्रदाय गारंटी अधिनियम 2010 कर्तव्य की दृष्टि से एक अनुकरणीय पहल मानी जा रही है।

आपके प्रदेश अध्यक्ष बनने के लगभग छः महीने पूरे हो चुके हैं। अब तक क्या प्रमुख कदम आपने उठाए, जो उल्लेखनीय है। 'शुचिता संकल्प' जैसे कदम का सत्ता तथा संगठन पर क्या प्रभाव आप देख रहे हैं?

छह माह के भीतर हमने 141 मण्डल का दौरा किया है। मध्यप्रदेश में 618 मण्डल हैं। एक वर्ष पूरा होते–होते हम 300 मण्डल तक पहुंच जाएंगे। आदिवासी, अनुसूचित क्षेत्र मेरी प्राथमिकता में हैं। कार्यकर्ता को लग रहा है कि उसके बीच कोई अध्यक्ष नहीं सामान्य कार्यकर्ता पहुंच रहा है। कार्यकर्ता से कार्यकर्ता की भेंट सहज होना, सरल होना भी एक उपलब्धि कही जा सकती है। भाजपा जहां पराजित हुई वहां हमने सदस्यता अभियान प्रारंभ किया। किसानों को लेकर अन्नदाता सम्मेलन किया। एक ही दिन में प्रदेश के अनेक जगहों 'राष्ट्रीय राजमार्ग बचाओ आंदोलन' किया। केन्द्रीय मंत्री कमलनाथ दिवस हुए। राजमार्ग कार्य प्रारंभ हुआ। भोपाल गैस त्रासदी, जो इतिहास में दब गई थी, इसके पीड़ितों की आवाज बनकर भाजपा उभरी। संघीय प्रणाली में मध्यप्रदेश के साथ पक्षपात करने के विरोध में पार्टी विधायकों ने दिल्ली स्थित जंतर–मंतर पर धरना दिया। मुख्यमंत्री शिवराज जी ने वनवासी सम्मान यात्रा निकाली। फूहड़ एवं अनावश्यक प्रचार–प्रसार से दूर, शुचिता की राजनीति की ओर बढ़ने का प्रयत्न प्रदेश में किया गया है। संगठन में विभिन्न स्तर पर ऐसी बुनावट की गई है जिसमें प्रवास और संवाद सहज हो गया है।

आप राष्ट्रीय सचिव से प्रदेश अध्यक्ष बने। राष्ट्रीय राजनीति से प्रदेश की राजनीति में कार्य करने का आपका कैसा अनुभव है?

हम कार्यकर्ता हैं। न किसी के दबाव में और न किसी के प्रभाव में कार्यकर्ता बने। राष्ट्रीयता से ओतप्रोत संगठन में कार्य करने की जिज्ञासा जगी। स्वयं के कारण स्वयं के मन से कार्यकर्ता बने। अतः संगठन की योजना में संगठन की योजना से काम करने की वृत्ति सदैव बनी रही। अतः मैं कहां हूं, इस पर कभी विचार नहीं किया। क्या काम मिला, इस पर विचार नहीं किया। काम करने की वृत्ति चित्त में बनी रहे और अपनी भूमिका के साथ न्याय करता रहूं, यही भाव सदैव रहा। चाहे मैं राष्ट्रीय सचिव रहा और आज प्रदेश अध्यक्ष हूं, तब भी कार्यकर्ता था और आज भी कार्यकर्ता हूं और जीवित रहने तक कार्यकर्ता रहूंगा। अतः मुझ पर इस बात का कोई असर नहीं पड़ता कि मैं कहां हूं, जहां रहा, संगठन में रहा। यही अपेक्षा रहती है।■

पृष्ठ 21 का शेष

में लगाने और युवाओं की ऊर्जा को सही दिशा देने को अधिक प्राथमिकता दूंगा। सभी को सुदूर क्षेत्रों तक में अच्छी शिक्षा और स्वास्थ्य सुविधाएं मिलें और समाज के हर वर्ग को नीतियों के निर्माण और क्रियान्वयन में शामिल किया जाये ऐसा वातावरण बनाना भी मेरी प्राथमिकता है। सन् 2013 तक मध्यप्रदेश को बिजली के मामले में सरप्लस बनाने की ओर मैं विशेष ध्यान दूंगा। हमने ग्रामीण परिवारों में 24 घंटे बिजली देने के लिये पांच हजार करोड़ रूपये लागत से फीडर सेपरेषण की महत्वाकांक्षी योजना लागू की है। इसके पूरा होने पर ग्रामीण परिवारों में बिजली कटौती इतिहास की बात हो जायेगी। सुशासन के लिये हमने जो अभिनव उपाय किये हैं उन्हें हम और आगे बढ़ायेंगे। इसी के अंग के रूप में आम जनता का शासकीय सेवाएं बेतहर ढंग से और समय–सीमा में उपलब्ध कराने के लिए लागू किये गये लोक सेवा गारंटी अधिनियम को हम पूरी दक्षता और क्षमता के साथ लागू करेंगे। प्रदेश वैसे तो कानून व्यवस्था के मामले में देश के अनेक प्रदेश की तुलना में काफी अच्छी स्थिति में हैं। फिर भी इस दिशाम ें हम और अधिक प्रभावी कदम उठाकर इसे और आदर्श स्वरूप प्रदान करें। कौशल विकास के रूप में मध्यप्रदेश को आदर्श राज्य बनाना मेरी बहुत महत्वाकांक्षी योजना है। हमने इसके लिये एक विस्तृत कौशल विकास कार्यक्रम बनाकर उस पर अमल शुरू किया है। पूरे प्रदेश में औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थानों का सुव्यवस्थित संजाल विकसित किया जायेगा। इन संस्थानों में नये तथा वर्तमान उद्योगों की आवश्यकताओं के अनुरूप नये पाठयक्रम और प्रशिक्षण लागू किये जायेंगे और पहले से चल रहे पाठ्यक्रमों में अनावश्यक संशोधन किये जायेंगे। हमारी योजना है कि प्रत्येक 10 गांवों के स्कूल पर कौशल विकास केन्द्र स्थापित किये जायें। हमने औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थानों में सीटों की संख्या वर्तमान 27 हजार से बढ़ाकर एक लाख करने का लक्ष्य निर्धारित किया है। इससे निश्चय ही कौशल विकास के क्षेत्र में मध्यप्रदेश एक आदर्श राज्य बनकर उभरेगा।■

मत चूको चौहान!

मध्यप्रदेश को स्वर्णिम बनाने का अवसर इतिहास ने शिवराज को दिया है

✍ l:t ; f}onh

fdसी भी राष्ट्र–राज्य के जीवन में पांच साल की अवधि कुछ नहीं होती। किंतु जो कुछ करना चाहते हैं उनके एक– एक पल का महत्व होता है। मध्यप्रदेश में ऐसी ही जिजीविषा का धनी एक व्यक्ति इतिहास रचने जा रहा है। ऐसे में उसके संगठन का उत्साह बहुत स्वाभाविक है। बात मप्र के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान की हो रही है। वे राज्य के ऐसे पहले गैरकांग्रेसी मुख्यमंत्री हैं जो सत्ता में पांच साल पूरे कर एक इतिहास का सृजन कर चुके हैं। मध्यप्रदेश में गैरकांग्रेसी सरकारों का आना बहुत बड़ी बात नहीं रही है किंतु उसका दुखद पक्ष है या तो सरकारें गिर गयीं या मुख्यमंत्री बदल गए। 1967 की संविद सरकार हो, 1977 की जनता सरकार हो या 1990 की भाजपा की सरकार हो। सबके साथ यह हादसा हुआ ही। ऐसे में मध्य प्रदेश भाजपा के लिए प्रसन्नता के दो कारण हैं। एक तो लगातार उसे राज्य में दूसरी पारी खेलने का मौका मिला है तो दूसरी ओर उसके एक मुख्यमंत्री को पांच साल काम करने का मौका मिला। इसलिए यह क्षण उपलब्धि का भी है और संतोष का भी। शायद इसीलिए राज्य भाजपा के नए अध्यक्ष सांसद प्रभात झा ने 'जनता वंदन–कार्यकर्ता अभिनंदन' की रचना तैयार की। यह एक ऐसी कल्पना है जो लोकतंत्र की बुनियाद को मजबूत करती है। होता यह है सत्ता में आने के बाद सरकारें जनता और कार्यकर्ता दोनों को भूल जाती हैं। ऐसे में यह आयोजन जनता और कार्यकर्ताओं को समर्पित कर भाजपा ने एक सही संदेश देने की कोशिश की है।

आप देखें तो राज्य भाजपा के लिए यह अवसर साधारण नहीं है। लगातार दूसरी बार सत्ता में आने का मौका और पिछले पांच सालों में तीन मुख्यमंत्री के बनाने और बदलने की पीड़ा से मुक्ति। सही मायने में भाजपा के किसी मुख्यमंत्री को पहली बार मुस्कराने का मौका मिला है। यह भी माना जा रहा है सारा कुछ ठीक रहा तो शिवराज सिंह चौहान ही अगले चुनाव में भी भाजपा का नेतृत्व करेंगे और यह सारी कवायद उसी जनाधार को बचाए, बनाए और तीसरी बार सत्ता हासिल करने की है। इस स्थायित्व को भाजपा सेलीब्रेट करना चाहती है। इसमें दो राय नहीं कि शिवराज सिंह चौहान ने इन पांच सालों में जो प्रयास किए वे अब दिखने लगे हैं। विकास दिखने लगा है, लोग इसे महसूस करने लगे हैं। सबसे बड़ी बात है कि नेतृत्व की नीयत साफ है। शिवराज अपने देशज अंदाज से यह महसूस करवा देते हैं कि वे जो कह रहे हैं दिल से कह रहे हैं। राज्य के निर्माण और स्वर्णिम मध्यप्रदेश या आओ बनाएं अपना मध्यप्रदेश जैसे नारे जब उनकी जबान से निकलते हैं तो वे विश्वसनीय लगते हैं। उनकी आवाज रूह से निकलती हुयी लगती है, वह नकली आवाज नहीं लगती। जनता के सामने वे एक ऐसे संचारकर्ता की तरह नजर आते हैं, जिसने लोगों की नब्ज पकड़ ली है। वे सपने दिखाते ही नहीं, उसे पूरा करने में लोगों की मदद मांगते हैं। वे सब कुछ ठीक करने का दावा नहीं करते और जनता के सहयोग से आगे बढ़ने की बात कहते हैं। जनसहभागिता का यह सूत्र उन्हें ऊंचाई दे जाता है। वे इसीलिए वे जिस तरह सामाजिक सुरक्षा, स्त्री के प्रश्नों को संबोधित कर रहे हैं उनकी एक अलग और खास जगह खुद बन जाती है। जिस दौर में रक्त से जुड़े रिश्ते भी बिगड़ रहे हों ऐसे कठिन समय में एक राज्य के मुखिया का खुद को तमाम लड़कियों के मामा

के रूप में खुद को स्थापित करना बहुत कुछ कह देता है।

शिवराज सिंह चौहान, राज्य भाजपा के पास एक आम कार्यकर्ता का प्रतीक भी हैं। बहुत पुरानी बात नहीं है कि जब वे विद्यार्थी परिषद के कार्यकर्ता के नाते इस महापरिवार में आए और अपनी लगातार मेहनत, श्रेष्ठ संवादशैली और संगठन कौशल से मुख्यमंत्री का पद भी प्राप्त किया। अपनी भाव–भंगिमाओं, प्रस्तुति और वाणी से वे हमेशा यह अहसास कराते हैं कि वे आज भी दल के साधारण कार्यकर्ता ही हैं। कार्यकर्ता भाव जीवित रहने के कारण वे लोगों में भी लोकप्रिय हैं और जनता के बीच नागरिक भाव जगाने के प्रयासों में लगे हैं। वे जनमर्म को समझकर बोलते हैं और नागरिक को वोट की तरह संबोधित नहीं करते।

भाजपा ने 'जनता वंदन–कार्यकर्ता अभिनंदन' की रचना तैयार की। यह एक ऐसी कल्पना है जो लोकतंत्र की बुनियाद को मजबूत करती है। होता यह है सत्ता में आने के बाद सरकारें जनता और कार्यकर्ता दोनों को भूल जाती हैं। ऐसे में यह आयोजन जनता और कार्यकर्ताओं को समर्पित कर भाजपा ने एक सही संदेश देने की कोशिश की है।

शिवराज सिंह जानते हैं वे एक ऐसे राज्य के मुख्यमंत्री हैं जो विकास के सवाल पर काफी पीछे है। किंतु इसका आकार–प्रकार और चुनौतियां बहुत विकराल हैं। इसलिए वे राज्य के सामाजिक प्रश्नों को संबोधित करते हैं। लाडली लक्ष्मी, जननी सुरक्षा योजना, मुख्यमंत्री कन्यादान योजना, पंचायतों में महिलाओं को पचास प्रतिशत आरक्षण ऐसे प्रतीकात्मक कदम है जिसका असर जरूर दिखने लगा है। इसी तरह राज्य में कार्यसंस्कृति विकसित करने के लिए लागू किए गए लोकसेवा गारंटी अधिनियम को एक नई नजर से देखा जाना चाहिए। शायद विश्व के प्रशासनिक इतिहास में ऐसा प्रयोग देखा नहीं गया है। किंतु मध्यप्रदेश की अगर जनता जागरूक होकर इस कानून का लाभ ले सके तो, सरकारी काम की संस्कृति बदल जाएगी और लोगों को सीधे राहत मिलेगी। शिवराज विकास की हर घुरी पर फोकस करना चाहते हैं क्योंकि मप्र को हर मोर्चे पर अपने पिछड़ेपन का अहसास है। उन्हें अपनी कमियां और सीमाएं भी पता हैं। वे जानते हैं कि एक जागृत और सुप्त पड़े समाज का अंतर क्या है। इसलिए वे समाज की शक्ति को जगाना चाहते हैं। वे इसलिए मप्र के अपने नायकों की तलाश कर रहे हैं। वनवासी यात्रा के बहाने वे इस काम को कर पाए। टांटिया भील, चंद्रशेखर आजाद, भीमा नायक का स्मारक और उनकी याद इसी कड़ी के काम हैं। एक साझा संस्कृति को विकसित कर मध्यप्रदेश के अभिभावक के नाते उसकी चिंता करते हुए वे दिखना चाहते हैं। मुख्यमंत्री की यही जिजीविषा उन्हें एक सामान्य कार्यकर्ता से नायक में बदल देती है। शायद इसीलिए वे विकास के काम में सबको साथ लेकर चलना चाहते हैं। राज्य के स्थापना दिवस एक नवंबर को उन्होंने उत्सव में बदल दिया है। वे चाहते हैं कि विकासधारा में सब साथ हों, भले ही विचारधाराओं का अंतर क्यों न हो। यह सिर्फ संयोग ही नहीं है कि जब मप्र की विकास और गर्वनेंस की तरफ एक नई नजर से देख रहा है तो पूरे देश में भी तमाम राज्यों में विकासवादी नेतृत्व ही स्वीकारा जा रहा है। बड़बोलों और जबानी जमाखर्च से अपनी राजनीति को धार देने वाले नेता हाशिए लगाए जा रहे हैं। ऐसे में शिवराज सिंह का अपनी पहचान को निरंतर प्रखर बनाना साधारण नहीं है। मध्यप्रदेश की जंग लगी नौकरशाही और पस्त पड़े तंत्र को सक्रिय कर काम में लगाना भी साधारण नहीं है। राज्य के सामने कृषि विकास दर को बढ़ाना अब सबसे बडी जरूरत है। एक किसान परिवार से आने के नाते मुख्यमंत्री इसे समझते भी हैं। इसके साथ ही निवेश प्रस्तावों को आकर्षित करने के लिए लगातार समिट आयोजित कर सरकार बेहतर प्रयास कर रही है। जिस राज्य के 45.5 प्रतिशत लोग आज भी गरीबी रेखा से नीचे जीवनयापन कर रहे हैं, उस राज्य की चुनौतियां साधारण नहीं है, शुभ संकेत यह है कि ये सवाल राज्य के मुखिया के जेहन में भी हैं।

भाजपा और उसके नेता शिवराज सिंह चौहान पर राज्य की जनता ने लगातार भरोसा जताते हुए बड़ी जिम्मेदारी सौंपी है। विरासत में मिली तमाम चुनौतियों की तरफ देखना और उनके जायज समाधान खोजना किसी भी राजसत्ता की जिम्मेदारी है। मुख्यमंत्री को इतिहास की इस घड़ी में यह अवसर मिला है कि वे इस वृहत्तर भूगोल को उसकी तमाम समस्याओं के बीच एक नया आयाम दे सकें। सालों साल से न्याय और विकास की प्रतीक्षा में खड़े मप्र की सेवा के हर क्षण का रचनात्मक उपयोग करें। बहुत चुनौतीपूर्ण और कंटकाकीर्ण मार्ग होने के बावजूद उन्हें इन चुनौतियों को स्वीकार करना ही होगा, क्योंकि सपनों को सच करने की जिम्मेदारी मध्यप्रदेश के भूगोल और इतिहास दोनों ने उन्हें दी है। जाहिर है वे इन चुनौतियों से भागना भी नहीं चाहेंगे।

मुख्यमंत्री के पद पर उनके पांच साल पूरे साल होने पर राज्य की जनता उन्हें अपनी शुभकामनाएं देते हुए शायद यही कह रही है 'मत चूको चौहान!' ■

मुख्यमंत्री ने चुनाव प्रकोष्ठ से कहा

पंचायत चुनावों के लिए स्वच्छ छवि व समर्पण से कार्य करने वालों को चुनें

मुख्यमंत्री प्रो. प्रेम कुमार धूमल ने पार्टी पदाधिकारियों से आग्रह किया है कि वे पंचायत चुनावों के लिए उन उम्मीदवारों को चुनें जिनकी साफ छवि और विकास की दृष्टि हो तथा जो संबंधित पंचायतों में कमजोर वर्गों के उत्थान के लिए तेज गति से कार्य कर सकें। मुख्यमंत्री 1 दिसंबर, 2010 को राज्य भाजपा मुख्यालय दीपकमल में राज्य भाजपा के पंचायती राज प्रकोष्ठ की राज्य स्तरीय बैठक को सम्बोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार ने शक्तियों का विकेन्द्रीकरण कर पंचायती राज संस्थानों को सुदृढ़ किया है, जो लोकतंत्र की मूलभूत इकाइयां हैं। पंचायतों को विकासात्मक कार्यों के लिए विभिन्न कार्यक्रमों के तहत आवश्यकतानुसार धनराशि उपलब्ध करवाई जा रही है और लगभग सभी समाज कल्याण के कार्यक्रम संबंधित पंचायत की सहमति से ही किए जा रहे हैं।

पंचायतों को अधिकार दिया गया है कि वे विभिन्न गरीबी उन्मूलन योजनाओं के तहत पात्र लोगों का चयन करें। यदि स्थानीय नेताओं की सहमति से सर्वसम्मति से उम्मीदवारों का चयन होता है तो पंचायत चुनावों में वही उम्मीदवार विजयी होंगे, जो भाजपा की विचारधारा का सम्मान करते हैं।

मुख्यमंत्री ने कहा कि पार्टी के कार्यकर्ताओं के पास लोगों को बताने के लिए गत तीन वर्षों में अर्जित राज्य सरकार की उपलब्धियां हैं। तथ्यों के आधार पर पार्टी के कार्यकर्ता लोगों की जिज्ञासा का समाधान कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि पार्टी कार्यकर्ताओं को विपक्ष के भ्रामक प्रचार का सामना तथ्यों के साथ करना चाहिए और मतदाताओं के समक्ष वास्तविकता रखनी चाहिए। उन्होंने कहा कि पार्टी कार्यकर्ताओं को लोगों को यह समझाना होगा कि प्रदेश में घरेलू गैस की कमी का कारण केन्द्र सरकार का कुप्रबन्धन है और महंगाई केन्द्र सरकार की गलत नीतियों के कारण है।

भाजपा पंचायतीराज प्रकोष्ठ की बैठक को संबोधित करते हिमाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री प्रो. प्रेमकुमार धूमल (बीच में)

उन्होंने कहा कि आम आदमी के साथ व्यक्तिगत संबंध पार्टी के लिए लाभदायक सिद्ध होंगे और अपने–अपने क्षेत्र में पार्टी कार्यकर्ताओं को इसे सुदृढ़ करना होगा। पार्टी कार्यकर्ताओं को विभिन्न गरीबी उन्मूलन एवं समाज कल्याण योजनाओं के लाभ कमजोर वर्गों तक पहुंचाने होंगे। सरकार ने प्रधानों एवं उप प्रधानों के प्रत्यक्ष चुनाव के लिए पंचायती राज अधिनियम में संशोधन किया है ताकि चुने हुए व्यक्ति आसानी से अपनी कार्यावधि पूरी कर सकें। उन्होंने पार्टी कार्यकर्ताओं का आह्वान किया कि वे स्व. श्री श्यामा प्रसाद मुखर्जी और स्व. पंडित दीन दयाल उपाध्याय जैसे महान युग दृष्टा नेताओं के सपनों को पूरा करें जिन्होंने निचले स्तर पर पंचायती राज संस्थाओं को सुदृढ़ करने की वकालत की थी।

राज्य भाजपा पंचायत प्रकोष्ठ के समन्वयक श्री एच.एन.कश्यप ने मुख्यमंत्री को प्रकोष्ठ द्वारा चुनाव संबंधी प्रयासों की जानकारी व उम्मीदवार चयन के लिए अपनाई जा रही प्रक्रिया की जानकारी दी। मण्डल स्तर तक प्रकोष्ठ की बैठकें आयोजित की गई हैं ताकि कार्यकर्ताओं को उनकी भूमिका की जानकारी दी जा सके। उन्होंने कहा कि प्रकोष्ठ बूथ स्तर तक कार्य करेगा और कार्यकर्ताओं को पंचायती राज अधिनियम के प्रावधानों की जानकारी दी जाएगी।

प्रकोष्ठ के महासचिव श्री रामा नन्द ने मुख्यमंत्री का स्वागत किया और पंचायत चुनाव के लिए किए गए प्रबन्धों की जानकारी दी। जिला समन्वयक श्री लाल चन्द ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया। राज्य भाजपा महासचिव श्री राम स्वरूप शर्मा, विधायक डा. राम लाल मारकण्डेय, राज्य भाजपा प्रवक्ता श्री गणेश दत्त, मिल्क फूड के अध्यक्ष श्री मोहन लाल जोशी और पार्टी के अन्य पदाधिकारी इस अवसर पर उपस्थित थे।■

नियुक्ति केन्द्रीय सतर्कता आयुक्त की

कमल संदेश

क्यों था कांग्रेस हठ थामस चयन पर ही? पीछे से तार खींच रहा था और कोई?

✍ vEckpj.k of'k"B

केन्द्रीय सतर्कता आयुक्त पद पर श्री पी जे थामस की नियुक्ति कांग्रेस के गले की हड्डी बन चुकी है, जिसे न तो अन्दर निगला जा पा रहा है और न ही बाहर उगलते बन रहा है। श्री थामस से अपने आप ही त्यागपत्र दे देने के प्रयास तो अवश्य हुए पर बात सिर न चढ़ सकी। अभी तक थामस साहिब ने सरकार को अपनी झेंप से बचाने के लिये कुछ नहीं किया है। उधर उच्चतम न्यायालय ने सरकार और श्री थामस को नोटिस जारी कर दिया है। अब अगली सुनवाई 27 जनवरी को होगी।

कांग्रेस की सर्वेसर्वा श्रीमती सोनिया गांधी और प्रधान मन्त्री डा0 मनमोहन सिंह की पूर्व संचार मन्त्री श्री ए राजा पर विशेष कृपादृष्टि रखने और उनके निर्दोष होने का फतवा जारी करने की मजबूरी तो समझ आती है क्योंकि उन्हें देश हित से कहीं अधिक कीमती लगता है अपनी सत्ता को बचाना। देश को श्री राजा ने 1.76 लाख करोड़ का डंक लगा दिया तो क्या, सरकार तो सुरक्षित है न। वह श्री राजा की डीएमके द्वारा प्रदत्त सांसों पर ही तो जी रही है।

पर समझ के परे है तो श्री थामस को लोक सभा में विपक्ष की नेता श्रीमती सुषमा स्वराज के ज़ोरदार विरोध के बावजूद हर सूरत में कांग्रेस व मनमोहन सरकार की केवल थामस और बस थामस को ही केन्द्रीय सतर्कता आयुक्त नियुक्त कर देने की ज़िद्द और मजबूरी। श्रीमती स्वराज का विरोध किसी राजनीति पर आधारित न होकर ठोस प्रमाणों की नींव पर खड़ा था जो सब सरकार के पास मौजूद थे। श्री थामस उस समय संचार सचिव थे जब श्री राजा मन्त्री थे और जब सारा 2जी स्पैक्ट्रम घोटाला हुआ। 1991 में केरल में घटित एक पामोलीन आयात घोटाले में उनके विरूद्ध एक आपराधिक मामला दर्ज है जो न्यायालय के विचाराधीन है। संयोग की बात तो यह है कि यह घोटाला भी केरल में तब घटित हुआ था जब वहां कांग्रेस नेतृत्व में सांझा सरकार थी।

केन्द्रीय सतर्कता आयुक्त एक संवैधानिक गौरवशाली पद है जिसे वही महानुभाव सुशोभित कर सकता है जिसकी नीयत, आचरण, ईमानदारी व निष्पक्षता पर कोई उंगली न उठा सके। उसकी कार्यनिष्ठा, कर्तव्यनिष्ठा, कार्यशैली व आचार अनुकरणीय होना चाहिये क्योंकि देश में व्याप्त भ्रष्टाचार को रोकने की बहुत बड़ी जिम्मेदारी तो उसके कन्धों पर है। पर क्या ऐसे बड़े सम्मानित पद पर उस व्यक्ति की नियुक्ति न्यायोचित है जिसके आचरण पर कोई भी उंगली उठा सकता हो?

तोड़ा अपना ही कानून

अब तो ऐसा लगता है कि कांग्रेस ने केन्द्रीय सतर्कता आयुक्त के पद को भरने की प्रक्रिया प्रारम्भ होने से पहले ही श्री थामस को इस उच्च पद पर सुशोभित करने का मन बना लिया था। इसलिये इस सारी प्रक्रिया को ऐसे ढंग से चालू किया गया कि सारे रोड़े हटा कर उनके चयन का रास्ता साफ कर दिया जाये। इस उद्देश्य की प्राप्ति में पहला रोड़ा था कार्मिक व प्रशिक्षण विभाग का 2002 का वह कार्यालय पत्र जिस में कहा गया था कि केन्द्रीय सेवा के किसी अधिकारी का सतर्कता प्रमाणपत्र तब तक नहीं रोका जा सकता जब तक कि ''किसी जांच एजेन्सी ने किसी आपराधिक मामले में किसी न्यायालय में उसके विरूद्ध अभियोगपत्र दाखिल न कर दिया हो और जो उस समय विचाराधीन हो''। और ध्यान में रखने वाली बात यह भी है कि उस समय तत्कालीन केन्द्रीय सतर्कता आयुक्त की सहमति से ही यह आदेश जारी हुये थे – उसी पद से जिस पर श्री थामस आरोहित होने जा रहे थे। इन नियमों के आधार पर श्री थामस को सतर्कता प्रमाणमत्र जारी नहीं हो सकता था। क्योंकि यह विभाग प्रधानमन्त्री के पास है इसलिये इन नियमों की अवहेलना कर श्री थामस को प्रमाणपत्र प्रधान मन्त्री की स्पष्ट स्वीकृति के बिना जारी भी नहीं हो सकता था। और नियमों का पालन कर यदि श्री थामस को यह प्रमाणपत्र जारी न होता तो उनका इस उच्च पद के लिये उनका नाम भी विचाराधीन नहीं हो सकता था।

केन्द्रीय सतर्कता आयुक्त के संवैधानिक पद पर चयन के लिये एक 3–सदस्यीय समिति है जिसके सदस्य प्रधान मन्त्री, केन्द्रीय गृह मन्त्री व लोक सभा में विपक्ष के नेता होते है। इस समिति के गठन का तात्पर्य स्पष्ट है कि निर्णय सर्वसहमति से हो, न कि मतदान से। यदि आशय मतदान से होता तो इस समिति के गठन को काई औचित्य ही नहीं रह जाता क्योंकि

सरकार का तो इस समिति में सदा ही दो–तिहाई का बहुमत रहेगा। विपक्ष के नेता का भी इस प्रक्रिया से जोड़ना एक उपहास और ढोंग ही बन कर रह जाता। श्रीमती सुषमा स्वराज की ठोस प्रमाणों पर आधारित आपत्ति को बिना जवाबी प्रमाण व तर्क के मनमाने ढंग से खारिज कर देना इस बात का संकेत है कि सरकार तो श्री थामस का चयन पहले ही कर चुकी थी और सारी प्रक्रिया तो बस एक औपचारिकता मात्र थी जिस में वह विपक्ष की नेता से अनुमोदन का अंगूठा लगवाने का प्रयास कर रही थी जिसमें सरकार विफल रही क्योंकि श्रीमती स्वराज अपने स्टैण्ड से टस से मस न हुईं। जब श्रीमती स्वराज ने सुझाव दिया कि अन्य नामों पर विचार कर लिया जाये तो सरकार इतनी अड़ियल थी कि वह श्री थामस को छोड़ किसी अन्य नाम पर विचार करने के लिये तैयार ही न थी। इस हठधर्मी से क्या यह निष्कर्ष निकाला जाये कि देश में श्री थामस को छोड़ कर उनसे अधिक सक्षम और स्वच्छ छवि वाला महानुभाव सरकार को कोई दिखा ही नहीं?

प्रधान मन्त्री और गृह मन्त्री के हठीले रवैये से तो ऐसा लगता है कि श्री थामस के चयन के पीछे तार खींचने वाली शक्ति कोई इतनी महान् है कि वह उसकी मंशा के विरूद्ध कुछ करने या सुनने की हिम्मत ही न रखते थे।

पिछले कई दिनों से खबरों का बाज़ार गर्म था कि श्री थामस कभी भी त्यागपत्र दे सकते हैं। समाचारपत्रों के सम्पादकीय भी उनके त्यागपत्र की ही मांग कर रहे थे और कह रहे थे कि श्री थामस के पास अब कोई और चारा रह ही नहीं गया है। मीडिया में तो यह भी चर्चा रही कि श्री थामस सरकार को अपनी झेंप मिटाने के लिये इस बात पर सौदा भी कर सकते हैं कि उनके विरूद्ध आपराधिक मामले पर मुकद्दमा चलाने की अनुमति के अनुरोध को सरकार ठुकरा दे और वह बिना अदालत जाये ही निर्दोष साबित हो जायें। पर सभी जानते हैं कि सरकार के ऐसे निर्णय न्यायोचित न हो कर कई राजनैतिक व शासकीय पूर्वाग्रहों से प्रेरित होते हैं और उनकी प्रामाणिकता वह नहीं होती जो एक न्यायालय के निर्णय की होती है। कुछ भी हो अब तो 27 जनवरी की प्रतीक्षा करनी ही होगी। इस बीच कुछ घटता है तो जीत दोनों प्रकल्पों में श्री थामस की ही होगी। ■

(लेखक भाजपा साहित्य एवं प्रकाशन प्रकोष्ठ के राष्ट्रीय संयोजक हैं)

उत्तर प्रदेश

वाराणसी में विस्फोट : भाजपा ने की मायावती के इस्तीफे की मांग

धर्मनगरी वाराणसी के दशाश्वमेध इलाके में शीतला गंगाघाट के किनारे 7 दिसम्बर 2010 को गंगा आरती के समय हुए एक धमाके में दो साल की एक बच्ची की मौत हो गई, जबकि करीब 32 अन्य लोग घायल हुए। धमाके की जिम्मेदारी इंडियन मुजाहिद्दीन ने ली। विस्फोट को सुरक्षा की बड़ी चूक करार देते हुए भारतीय जनता पार्टी ने मुख्यमंत्री मायावती के इस्तीफे की मांग की है। भाजपा, उत्तर प्रदेश के अध्यक्ष श्री सूर्य प्रताप शाही ने वाराणसी में संवाददाताओं से कहा कि सुरक्षा व्यवस्था को लेकर राज्य सरकार के लापरवाही भरे रवैये का कारण आतंकी घटना सामने आई है। मायावती को इस बात को स्वीकार करना चाहिए कि इस आतंकी हमले ने राज्य की कानून–व्यवस्था की सच्चाई सामने ला दी है। अब उन्हें अपने पद से इस्तीफा दे देना चाहिए।

वाराणसी पहुंचे श्री शाही ने अस्पतालों का दौरा किया और घायलों की स्थिति की जानकारी ली। उन्होंने जोर दिया कि मीडिया में पिछले दिनों से इस तरह की खबरें आ रही थीं कि उत्तर प्रदेश में आतंकी हमला हो सकता है, इस सबके बावजूद राज्य सरकार सुरक्षा इंतजाम पुख्ता करने के बजाय सो रही थी। ये पूरी तरह से राज्य सरकार के खुफिया तंत्र की नाकामी है।

ek;k ljdkj d: f[kykQ Hkktik ykecn

भारतीय जनता पार्टी उत्तर प्रदेश की मायावती सरकार के कुशासन के खिलाफ 15 दिसंबर से प्रदेशव्यापी अभियान चलाएगी। भाजपा, उत्तर प्रदेश अध्यक्ष श्री सूर्य प्रताप शाही ने लखनऊ स्थित पार्टी मुख्यालय में आयोजित संवाददाता सम्मेलन में कहा कि 15 दिसंबर से 15 जनवरी तक पार्टी के कार्यकर्ता प्रदेश के कोने–कोने जाकर 'गांव चलो–गली चलो अभियान' चलाकर भ्रष्टाचार में डूबी बसपा सरकार का काला चिट्ठा खोलेंगे। श्री शाही ने कहा कि अभियान के दौरान भाजपा कार्यकर्ता गांव–गांव जाकर जनता के सामने उत्तर प्रदेश के पिछड़ापन को सामने रखेंगे और लोगों को इस सरकार की वास्तविकता से अवगत कराएंगे। ■

युवा हुंकार रैली में जुटे हजारों युवाओं ने सरकार बदलने का संकल्प लिया

laoknnkrk }kjk

Hkkरतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय महामंत्री श्री धर्मेन्द्र प्रधान ने 5 दिसम्बर 2010 को दीप सैन्ट्रल मार्केट अशोक विहार में भारतीय जनता युवा मोर्चा द्वारा आयोजित युवा हुंकार रैली में कहा कि केन्द्र और दिल्ली की कांग्रेस सरकारों की अक्षमता एवं नाकारेपन के कारण आज दिल्ली में कानून व्यवस्था समाप्त सी हो गई है। यहां भ्रष्टाचार, मंहगाई एवं बेरोजगारी अपनी चरम सीमा पर है। दिल्ली की मुख्यमंत्री का यह बयान कि बी.पी.ओ. और काल सैन्टर्स में कार्यरत महिलाओं को अब शाम 7 बजे के बाद पुलिस उनके घर तक छोड़ेगी, यह बताता है कि स्वयं मुख्यमंत्री दिल्ली की अराजक कानून व्यवस्था के आगे घुटने टेक चुकी है। अब वे मान चुकी है कि दिल्ली में कोई भी महिला उनके राज में सुरक्षित नहीं है। रैली को भाजपा दिल्ली प्रदेश अध्यक्ष श्री विजेन्द्र गुप्ता, युवा मोर्चा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अनुराग ठाकुर, पार्टी की राष्ट्रीय मंत्री वाणी त्रिपाठी आदि ने भी संबोधित किया।

श्री प्रधान ने कहा कि कांग्रेस का चरित्र ही भ्रष्टाचार करने का है इसलिए उसके शासन में केन्द्र और दिल्ली में इतने घोटाले हुए है कि आम जनता का विश्वास अब कांग्रेसी शासन से पूरी तरह समाप्त हो गया है। लोग कांग्रेसी कुशासन से छुटकारा चाहते है। युवाओं में भ्रष्टाचार और बेरोजगारी को लेकर इतना अधिक आक्रोश है कि वे सड़कों पर उतरकर इस जनविरोधी शासन को पूरी तरह मिट्टी में मिलाने का मन बना चुके है। यदि आज दिल्ली में चुनाव हो जाए तो शीला दीक्षित का हाल बिहार के लालू–राबड़ी शासन की तरह होगा।

विशाल रैली को संबोधित करते हुए श्री विजेन्द्र गुप्ता ने कहा कि अशोक विहार में आज युवाओं की जो भीड़ रैली में उमड़ी है वह कांग्रेसी सरकार को यह बताने के लिए काफी है कि दिल्ली में अब कांग्रेसी कुराज के दिन समाप्त होने वाले है। देश और दिल्ली की जनता परिवर्तन चाहती है। यह परिवर्तन भारतीय जनता पार्टी युवाओं के द्वारा शीघ्र ही करेगी जब कांग्रेस शासन का नामोनिशान मिट जाएगा। उन्होंने कहा कि दिल्ली आज भंयकर मंहगाई, बेरोजगारी, असीमित भ्रष्टाचार और कानून व्यवस्था की समाप्ति से बुरी तरह जूझ रही है। इसका प्रत्यक्ष उदाहरण यह है कि दिल्ली की पूर्व अतिरिक्त आयुक्त किरण वेदी ने यह कहा है कि दिल्ली में पुलिस व्यवस्था बुरी तरह चरमरा गई है। लोग अब भगवान भरोसे अपने जानमाल की स्वयं रक्षा कर रहे है। दिल्ली में कोई भी महिला एक महिला मुख्यमंत्री होने के दौरान भी न तो सड़कों पर सुरक्षित है और न ही अपने घर में। बुजुर्गों की हर रोज घरों में घुसकर हत्याएं की जा रही है, युवाओं को भीषण बेरोजगारी ने अपनी चपेट में ले लिया है, सरकार के पास युवाओं को कौशल और रोजगार देने के लिए कोई भी ठोस योजना नहीं है। भ्रष्टाचार ने आजादी के बाद के सारे रिकार्ड तोड़ दिए है। कांग्रेस चुन–चुन कर संवैधानिक संस्थाओं को समाप्त करना चाह रही है। इसीलिए उसने केन्द्रीय सतर्कता आयुक्त के पद

मंहगाई, बेरोजगारी, भ्रष्टाचार और आतंकवाद के खिलाफ भाजयुमो द्वारा आयोजित ''युवा हुंकार रैली'' के दौरान– भाजपा के राष्ट्रीय महासचिव श्री धर्मेन्द्र प्रधान, दिल्ली प्रदेश भाजपा अध्यक्ष श्री विजेन्द्र गुप्ता एवं मोर्चा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अनुराग ठाकुर एवं अन्य।

पर पी.जे. थामस जैसे भ्रष्ट व्यक्ति की नियुक्ति करके समाज को साफ संदेश दे दिया है कि कांग्रेसी राज में भ्रष्टाचार और घोटाले होते ही रहेंगे। उन्होंने सरकार को चेतावनी दी की यदि दिल्ली में तुरन्त कानून व्यवस्था का राज कायम नहीं होता, युवकों को रोजगार नहीं दिया जाता तो भाजपा जन संघर्षों का तांता लगा देगी और भ्रष्ट कांग्रेसी शासन को उखाड़ फेकेगी।

रैली को संबोधित करते हुए युवा मोर्चा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनुराग ठाकुर ने कहा कि देश और दिल्ली के युवाओं में सत्ता परिवर्तन की चाहत घर कर गई है। युवा अब देश में भाजपा का शासन चाहते है। आज की रैली में उमड़ी भीड़ कांग्रेस को यह संदेश देती है की अब उसके भ्रष्ट शासन के दिन समाप्त होने वाले है। पार्टी की राष्ट्रीय मंत्री वाणी त्रिपाठी ने कहा कि दिल्ली में भ्रष्टाचार, मंहगाई और बेरोजगारी चरम सीमा पर है। दुख की बात यह है कि भारत की राजधानी में बलात्कारी खुले घुम रहे है और सरकार उनका बाल भी बांका नहीं कर पा रही है। मुख्यमंत्री शीला दीक्षित के लिए यह शर्म की बात है कि राजधानी को सर्वोच्च न्यायालय ने भी बलात्कारियों का स्वर्ग बताया है।

रैली में दिल्ली प्रदेश भाजपा के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष श्री मांगे राम गर्ग, प्रदेश उपाध्यक्ष श्री पवन शर्मा, विधायक श्यामलाल गर्ग, अनेक प्रदेश पदाधिकारियों, भारतीय जनता युवा मोर्चा के प्रदेश अध्यक्ष नकुल भारद्वाज, केशव पुरम जिला भाजपा अध्यक्ष रेखा गुप्ता, पार्षदों– महेन्द्र नागपाल, देवराज, ममता ढिका, सुरेश भारद्वाज, अशोक भारद्वाज, ध्रुव, हेमन्त, संजीव शर्मा, विरेन्द्र गोयल, अनिल यादव, पवन गौड़, शशि जेतली, नीरज गुप्ता, राजेश्वर नागपाल आदि उपस्थित थे।■

डॉ. अम्बेडकर पुण्यतिथि पर कार्यक्रम संपन्न

भारतीय जनता पार्टी, अनुसूचित जाति मोर्चा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री दुष्यन्त कुमार गौतम के नेतृत्व में भारत रत्न डा0 भीमराव अम्बेडकर की पुण्य तिथि 6 दिसम्बर, को 11, अशोक रोड, नई दिल्ली पर भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय महामंत्री श्री धर्मेन्द्र प्रधान, अनुसूचित जाति मोर्चा के वरिष्ठ सासंद श्री विरेन्द्र कश्यप, श्री अर्जुन मेघवाल, विरेन्द्र खटीक, युवा मोर्चा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अनुराग ठाकुर, अनुसूचित जनजाति मोर्चा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री फग्गन सिंह कुलस्ते, श्री श्याम जाजू, श्री रामविचार नेताम एवं दिल्ली प्रदेश अनुसूचित जाति मोर्चा के अध्यक्ष श्री किशन लाल ढिलोड़ व पार्टी के वरिष्ठ नेताओं ने श्रद्वांजलि अर्पित की। कार्यक्रम के उपरान्त एक प्रतिनिधि मण्डल ने श्री विरेन्द्र कश्यप, श्री अर्जुन मेघवाल, डा0 किरीट भाई सोलंकी, श्री अशोक अर्गल, एवं श्री रामनाथ कोविन्द के नेतृत्व में प्रधानमत्री डा0 मनमोहन सिंह को ज्ञापन भेंट किया। जिसमें डा0 भीमराव अम्बेडकर स्मारक 26, अलीपुर रोड, नई दिल्ली को गांधी समाधि के समतुल्य सम्मान दिया जाए एवं जन्म भूमि महू (मध्यप्रदेश) के आस पास कोई भी निर्माणकार्य ना करने सम्बंधी विरोध प्रकट कराया। ■

राजस्थान

कांग्रेस से ऊबी जनता : वसुंधरा राजे

भाजपा की राष्ट्रीय महासचिव एवं पूर्व मुख्यमंत्री श्रीमती वसुन्धरा राजे सिंधिया ने कहा राज्य की जनता कांग्रेस राज से ऊब चुकी है। केन्द्र व राज्य दोनों जगह कांग्रेस की सरकार होने के बावजूद विकास ठप तथा महंगाई आसमान छू रही है। जब से कांग्रेस ने सत्ता संभाली है, तब से कानून व्यवस्था दिनोंदिन बिगड़ती जा रही है। वे 8 दिसंबर 2010 को मांडियाई खुर्द गांव (ओसियां) में एक विशाल जनसभा को सम्बोधित कर रही थीं। उन्होंने कहा कि भाजपा राज में ओलावृष्टि व अतिवृष्टि के तुरन्त बाद गिरदावरी करवाकर राज्य के किसानों को उचित मुआवजा दिया गया था, लेकिन गत दिनों राज्य में हुई बेमौसम की बारिश से हुए फसल खराबे के आकलन का कार्य अभी तक शुरू नहीं किया गया है। उन्होंने कहा कि भाजपा 36 कौम को साथ लेकर चलने वाली पार्टी है। राज्य की जनता ने मौका दिया तो फिर विकास की गंगा बहाएंगे। विकास के नाम लोग आज भी भाजपा को याद कर रहे है। भाजपा राज में विकास के लिए धन की कमी नहीं रही, मगर कांग्रेस हमेशा खजाना खाली होने का रोना रोती हैं। ■